वीर समय उत्कृष्ट स्थिति, वर्ष सवासय होय ।
भाग तीन कीजे तसु, ए तीनूं वय जोय ॥ ८ ॥
इम सगले उत्कृष्ट स्थिति, तिण भागे वय तीन ।
अन्तिम वय उगणीस जिन, धुर वय पंच सुचीन ॥९॥
श्वेत वरण चंद सुविधि जिन, पदम वासुपूज्य लाल ।
मुनि सुव्रत रिठनेम प्रभु, कृष्ण वरण सुविशाल ॥१०॥
मल्लिनाथ फुन पार्श्व प्रभु, नील वरण वर अङ्ग ।
षोड़स शेष जिनेश तनु, सोवन वरण सुचंग ॥११॥
श्रेयांस मल्लि मुनि सुव्रत जिन, नेम पार्श्व जगदीश ।
प्रथम पहर दीक्षा ग्रही, पिछले पोहर उन्नीस ॥ १२ ॥
सुमति जीम दीक्षा ग्रही, अठम भक्त मल्लि पास ।
छठ भक्त जिन वीस वर, वासुपूज्य उपवास ॥ १३ ॥
ऋषभ अष्टापद शिव गमन, वीर पावापुरी दीस ।
नेम गिरनारे वासु चंपा, शिखर समेत सुवीस ॥१४॥
ऋषभ संथारे शिव गमन, चउदश भक्त उदार ।
चरम छठ अणासण पवर, वावीस मास संथार ॥१५॥
ऋषभ वीर अरु नेम जिन, पल्यङ्क आसन शिव पेख ।
शेष इकवीस जिनेश्वरु, काउसग मुद्रा देख ॥ १६ ॥
जिन चौवीस तणा सुगुण, रचिये वचन रसाल ।
ध्यान सुधा वर सार रस, जय जश करण विशाल ॥१७॥

प्रथम ऋषभ जिन स्तवन ।

(ऐसे गुरु किम पावियै पदेशी)

बन्दु बे कर जोड़ने, जुग आदि जिनन्दा । कर्म रिपु गज उपरै, मृगराज मुनिन्दा ॥ प्रणमूं प्रथम जिनन्द ने, जय जय जिन चन्दा ॥ ए आंकड़ी ॥ १ ॥ अनुकूल प्रतिकूल सम सही, तप विविध तपिन्दा । चेतन तनु भिन्न लेखवी, ध्यान शुक्ल ध्यावंदा ॥ २ ॥ पुद्गल सुख अरि पेखिया, दुःख हेतु भयाला । विरक्त चित विगर्यो इसो, जाण्या प्रत्यक्ष जाला ॥ ३ ॥ संवेग सरवर झूलतां, उपशम रस लीना । निन्दा स्तुति सुख दुःखे, सम भाव सुचीना ॥ ४ ॥ वांसी चन्दन सम पणे, थिर चित जिन ध्याया । इम तन सार तजी करी, प्रभु केवल पाया ॥५॥ हूं बलिहारी तांहरी, वाह वाह जिनराया । उवा दशा किण दिन आवसी, मुझ मन उमाया ॥ ६ ॥ उगणीसे सुदि भाद्रवे दशमी दीतवारं । ऋषभदेव स्तवे करी, हुओ हर्ष अपारं ॥ ७ ॥

श्री अजित जिन स्तवन ।

(अहो प्रिय तुम वट पाडी पदेशी)

अहो प्रभु अजित जिनेश्वर आपरो, ध्याउं ध्यान हमेश हो । अहो प्रभु अशरण शरण तूंही सही, मेटण

सकल कलेश हो ॥ अहो प्रभु तुम हौ दायक शिव पंथना ॥ १ ॥ अहो प्रभु उपशम रस भरी आपरी, वाणी सरस विशाल हो । अहो प्रभु सुगत निसरणी महा मनोहरु, सुणयां मिटे भ्रमजाल हो ॥ २ ॥ अहो प्रभु उभय बन्धण आप आखिया, राग द्वेष विकराल हो । अहो प्रभु हेतु ए नरक निगोदना, राच्या मूरख वाल हो ॥ ३ ॥ अहो प्रभु रमणी राक्षसणी समी कही, विष वेलि मोह जाल हो । अहो प्रभु काम ने भोग किम्पाक सा, दाख्या दीन दयाल हो ॥ ४ ॥ अहो प्रभु विविध उपदेश देई करी, तें तार्या नर नार हो । अहो प्रभु भवसिन्धु पोत तूँही सही, तूंही जगत् आधार हो ॥ ५ ॥ अहो प्रभु शरण आयो तुज साहिबा, वस रह्या हीया मांहि हो । अहो प्रभु आगम वयण अङ्गी करी, रह्यो ध्यान तुज ध्याय हो ॥ ६ ॥ अहो प्रभु सम्वत् उगणीसै ने भाद्रवे, दशमी आदित्यवार हो । अहो प्रभु आप तणा गुण गाविया वर्त्या जय जय- कार हो ॥ ७ ॥

श्री संभव जिन स्तवन ।

(हूं बलिहारी हो जादवाँ परदेशी)

संभव साहिब समरीये, धार्‍यो हो जिण निरमल ध्यान के ॥ इक पुद्गल दृष्टि थापने ॥ कीधो है मन

मेरु समान के ॥ संभव साहिब समरिये ॥ १ ॥ ए आंकड़ी ॥ तन चञ्चलता मेट ने, हुआ है जग थी उदासीन के । धर्म शुक्ल थिर चित्त धरै, उपशम रस में होय रह्या लीन के ॥ सं० ॥ २ ॥ सुख इन्द्रादिक नां सहु, जाण्या है प्रभु अनित्य असार के । भोग भयङ्कर कटुक फल, देख्या है दुर्गति दातार के ॥ सं० ॥ ३ ॥ सुधा संवेग रस भस्या, पेख्या है पुद्गल मोह पास के । अरुचि अनादर आण ने, आतम ध्याने करता विलास के ॥ सं० ॥ ४ ॥ संग छांड़ मन वश करी, इन्द्रिय दमन करी दुर्दंत के । विविध तपे करी स्वामजी, घाती कर्म नो कीधो अन्त के ॥ सं० ॥ ५ ॥ हूं तुज शरणे आवियो, कर्म विदारण तूं प्रभु वीर के । ते तन मन वच वश किया, दुःकर करणी करण महा धीर के ॥ सं ॥ ६ ॥ संवत उगणीसे भाद्रवे, सुदि इग्यारस आण विनोद के । संभव साहिब समरिया, पाम्यो है मन अधिक प्रमोद के ॥ सं० ॥ ७ ॥

श्री अभिनन्दन जिन स्तवन ।

(सती कलूजी हो हुआ संजम ने त्यार एदेशी)

तीर्थंकर हो चोथा जग भाण, छांडि ग्रहवास करी मति निरमली । विषय विटम्बण हो तजिया, विष फल जाण । अभिनन्दन वान्दुं नित्य मन रली ॥ १ ॥

ए आंकड़ी ॥ दुःकर करणी हो कीधी आप दयाल, ध्यान सुधा रस सम दम मन गली, संग त्याग्यो हो जाणी माया जाल ॥ अ० ॥ २ ॥ वीर रसे करी हो कीधी तपस्या विशाल, अनित्य अशरण भावन अशुभ निरदली । जग झूठो हो जाण्यो आप कृपाल ॥ अ० ॥ ३ ॥ आत्म मन्ली हो सुखदाता सम परिणाम, एहिज अमित अशुभ भावे कलकली । एहवी भावन हो भाया जिन गुण धाम ॥ अ० ॥ ४ ॥ लीन संवेगे हो ध्याया शुक्ल ध्यान, क्षायक श्रेणी चढी हुआ केवली । प्रभु पाम्या हो निरावरण सुज्ञान ॥ अ० ॥ ५ ॥ उपशम रस भरी हो वागरी प्रभु वाण, तन मन प्रेम पाया जन सांभली । तुम वच धारी हो पाम्या परम कल्याण ॥ अ० ॥ ६ ॥ जिन अभिनन्दन हो गाया तन मन प्यार, सम्वत् उगणीसे मे भाद्रवे अघदली । सुदि इग्यारस हो हुओ हर्ष अपार ॥ अ० ॥ ७ ॥

श्री सुमति जिन स्तवन ।

(मुरख जीवड़ा रे गाफल मत रहे परदेशी)

सुमति जिनेश्वर साहेब शोभता, सुमति करण संसार । सुमति जप्यां थी सुमति वधै घणी, सुमति सुमति दातार ॥ सु० ॥ १ ॥ ए आंकड़ी ॥ ध्यान सुधारस निर्मल ध्याय ने, पाम्या केवल नाण । वाण

सरस वर जन बहु तारिया, तिमिर हरण जग भाण ॥ सु० ॥ २ ॥ फटिक सिंहासण जिनजी फावता, तरु आशोख उदार। छत्र चामर भामंडल झलकतो, सुर दुन्दुभि झिणकार ॥ सु० ॥ ३ ॥ पुष्प वृष्टि वर सुर ध्वनि दीपतो, साहिब जग सिणगार। अनन्त ज्ञान दर्शन सुख बल घणुं, ए द्वादस गुण श्रीकार ॥ सु० ॥ ४ ॥ वाणी अमी सम उपशम रस भरी, दुर्गति मूल कषाय। शिव सुखना अरि शब्दादिक कह्या, जग तारक जिनराय ॥ सु० ॥ ५ ॥ अन्तरजामी रे शरणे आप रे, हूं आयो अवधार। जाप तुमारो रे निश दिन संभरु, शरणागत सुखकार ॥ सु० ॥ ६ ॥ सम्वत् उगणीसै रे सुदि पक्ष भाद्रवे, वारस मंगलवार। सुमति जिनेश्वर तन मन स्यूं रम्या, आनन्द उपनो अपार ॥ सु० ॥ ७ ॥

श्री पद्म जिन स्तवन ।

(जिन्दवे री देशी छै सुण भगते भगवन्त के पदेशी)

निर्लेप पद्म जिसा प्रभु, पद्म प्रभु पीछाण २ संयम लीधो तिण समै। पाया चोथो नाण, पद्म प्रभु नित्य समरिये ॥ १ ॥ ए आंकड़ी ॥ ध्यान शुक्ल प्रभु ध्याय ने, पाया केवल सोय २। दीन दयाल तणी दिशा,

कहगो नांवे कोय ॥ पद्म० ॥ २ ॥ सम दम उपशम रस भरी, प्रभु आप री वाणि २ । त्रिभुवन तिलक तूं ही सही, तूं ही जनक समान ॥ पद्म० ॥ ३ ॥ तूं प्रभु कल्पतरु समो, तूं चिन्तामणि जोय २ । समरण करतां आपरो, मन वंछित होय ॥ पद्म० ॥ ४ ॥ सुखदायक सहु जग भणी, तूं ही दीन दयाल २ । शरणे आयो तुज साहिबा, तूं ही परम कृपाल ॥ पद्म० ॥ ५ ॥ गुण गातां मन गहगहे, सुख सम्पति जाण २ । विघ्न मिटै समरण कियां, पामै परम कल्याण ॥ पद्म० ॥ ६ ॥ सम्वत् उगणीसै ने भाद्रवे, सुदि वारस देख २ । पद्म प्रभु रच्या लाडनूं, हुओ हर्ष विशेष ॥ पद्म० ॥ ७ ॥

श्री सुपास जिन स्तवन ।

(कृपण दीन अनाथ ए एदेशी)

सुपास सातमां जिणंद ए, ज्यांने सेवे सुर नर वृन्द ए । सेवक पूरण आश ए, भजिये नित्य स्वामि सुपास ए ॥ १ ॥ ए आंकड़ी ॥ जन प्रति बोधण काम ए, प्रभु वागरै वाण अमाम ए । संसार स्यूं हुवे उदास ए ॥ भ० ॥ २ ॥ पामै काम भोग थी उद्वेग ए, वलि उपजै परम सवेग ए । एहवा तुम वच सरस विलास

ए ॥ भ० ॥ ३ ॥ घणी मीठी चक्री नी खीर ए, वलि खीर समुद्र नो नीर ए। एह थी तुम वच अधिक विमास ए ॥ भ० ॥ ४ ॥ सांभल ने जन वृन्द ए, रोम रोम में पामें आनन्द ए। ज्यांरी मिटे नरकादिक त्रास ए ॥ भ० ॥ ५ ॥ तूँ प्रभु दीन दयाल ए, तूँही अशरण शरण निहाल ए। हूं कूं तुमारो दास ए ॥ भ० ॥ ६ ॥ सबल उगणीसे सोय ए, भाद्रवा सुदि तेरस जोय ए। पहुंची मन नी आश ए ॥ भ० ॥ ७ ॥

श्री चन्द्र प्रभु जिन स्तवन।

(शिवपुर नगर सुहामणो एदेशी)

हो प्रभु चन्द जिनेश्वर चन्द जिस्या, वाणी शीतल चन्द सी न्हाल हो। प्रभु उपशम रस जन सांभलै, मिटै कर्म भ्रम मोह जाल हो ॥ प्रभु ॥ १ ॥ ए आंकड़ी ॥ हो प्रभु सूरत मुद्रा सोहनी, वारू रूप अनूप विशाल हो। प्रभु इन्द्र शचि जिन निरखतो, ते तो तृप्त न होवे निहाल हो ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ अहो वीतराग प्रभु तूं सही, तुम ध्यान ध्यावे चित्त रोक हो। प्रभु तुम तुल्य ते हुवे ध्यान स्यूं, मन पाया परम सन्तोष हो ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ हो प्रभु लीन पणे तुम ध्यावियां, पामै इन्द्रादिक नी ऋद्धि हो। वले विविध भोग सुख सम्पदा, लहे आमो सही आदि लब्धि हो ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ हो

प्रभु नरेन्द्र पद पामे सही, चरण सहित ध्यान तन मन हो। प्रभु अहमिन्द्र पद पावे वलि, कियां निश्चल थारो भजन हो ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ हो प्रभु शरण आयो तुज साहिवा, तुम ध्यान धरुं दिन रयन हो। तुज मिलवा मुझ मन उमह्यो, तुम शरणा स्यूँ सुख चैन हो ॥प्रभु० ॥ ६ ॥ संवत उगणीसै ने भाद्रवे, सुदि तेरस ने बुध-वार हो। प्रभु चन्द्र जिनेश्वर समरिया, हुओ आनन्द हर्ष अपार हो ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥

श्री सुविधि जिन स्तवन।

(सोही तेरा पंथ पावैं हो एदेशी)

सुविधि करि भजिये सदा, सुविधि जिनेश्वर स्वामी हो। पुष्प दन्त नाम दूसरो, प्रभु अन्तरजामी हो। सुविधि भजिये सिरनामी हो ॥ १ ॥ ए आंकड़ी ॥ श्वेत वरण प्रभु शोभता, वारू वाणी अमामी हो। उपशम रस गुण आगलो, मेटण भव भव खामी हो ॥ सु० ॥२॥ समवसरण विच फावता, त्रिभुवन तिलक तमामी हो। इन्द्र थकी ओपे घणां, शिवदायक स्वामी हो ॥ सु० ॥ ३ ॥ सुरेन्द्र नरेन्द्र चन्द्र ते, इन्द्राणी अभिरामी हो। निरख निरख धापे नहीं, एहवो रूप अमामी हो ॥सु० ॥ ४ ॥ मधु मकरन्द तणी परें, सुर नर करत सलामी

हो । तो पिण राग व्यापै नहीं, जीत्यो मोह हरामी हो ॥ ५ ॥ जे जोधा जग में घणा, सिंघ साथे संग्रामी हो। ते मन इन्द्रिय वश करो, जोड़ी केवल पामी हो ॥ सु० ॥ ६ ॥ उगणीसै पुनम भाद्रवी, प्रणमु शिरनामी हो । मन चिन्तित वस्तु मिलै, रटियां जिन स्वामी हो ॥ सु० ॥ ७ ॥

श्री शीतल जिन स्तवन ।

(हूं देवा आइ ओलंभड़ो सासुजी एदेशी)

शीतल जिन शिवदायका ॥ साहेबजी ॥ शीतल चन्द समान हो ॥ निस्नेही ॥ शीतल अमृत सारिखा ॥ साहेबजी ॥ तप्त मिटै तुम ध्यान हो ॥ निस्नेही ॥ सूरत थांरी मन बसी साहेबजी ॥ १ ॥ वंदे निंदे तो भणी साहेबजी, राग द्वेष नहीं ताम हो ॥ निस्नेही ॥ मोह दावानल ते मेटियो ॥ साहेबजी ॥ गुण निष्पन्न तुम नाम हो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥ २ ॥ नृत्य करै तुज आगलें साहेबजी, इन्द्राणी सुर नार हो ॥ निस्नेही ॥ राग भाव नहीं उपजै ॥ साहेबजी ॥ ते अन्तर तप्त निवार हो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥३॥ क्रोध मान माया लोभ ए ॥ साहेबजी ॥ अग्नि सूँ अधिको आग हो ॥ निस्नेही ॥ शुक्ल ध्यान रूप जलकारी ॥ साहेबजी ॥

॥ प्र० ॥ ४ ॥ स्त्री स्नेह पाशा दुर्दन्ता, काछ्या नरक निगोद तणा पन्था । इह भव परभव दुःखदाणी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ गज कुम्भ दले मृगराज हणी, पिण दोहिलो निज आत्मा दमणी । इम सुण बहु जीव चेत्या जाणी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ भाद्रवो पूनम उगणीसो, कर जोड़ नमूं वासुपूज्य इसो । प्रभु गांतां रोम राय हुलसाणी ॥ प्र० ॥ ७ ॥

श्री विमल जिन स्तवन ।

काँय न माँगा काँय न माँगा हो राणाजी मांगा पूर्ण प्रीत वीजूं
(काँय न माँगा एदेशी)

शरणे तिहारे हो विमल प्रभु, सेवक नी अरदाश ।
आयो शरण तिहारे हो, विमल करण प्रभु विमलनाथजी ॥
विमल आप मल रहीत, विमल ध्यान धरतां हुवे निर्मल ।
तन मन लागी प्रीत, साहेब शरणे तिहारे हो ॥ १ ॥
विमल ध्यान प्रभु आप ध्याया, तिण सूं हुआ विमल जगदीश । विमल ध्यान वलि जे कोई ध्यासी, होसी विमल सरीस ॥ सा० ॥ २ ॥ विमल गृहवासे द्रव्य जिनेन्द्र था, दीक्षा लियां भावे साध । केवल उपना भावे जिनेश्वर, भावे विमल आराध ॥ सा० ॥ ३ ॥ नाम स्थापना द्रव्य विमल थी, कारज न सरे कोय । भाव विमल थी कारज सुधरे, भाव जप्यां शिव होय ॥ सा०

कृष्टो ध्यान तणो कियो, आलम्बन श्री जिनराज रे ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ इन्द्रिय विषय विकार थी, नरकादिक रुलियो जीव रे । किम्पाक फल नी उपमा, रहिये दूर थी दूर सदीव रे ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ संयम तप जप शील ए, शिव साधन महा सुखकार रे । अनित्य अशरण अनन्त ए, ध्यायो निर्मल ध्यान उदार रे ॥ श्रे० ॥५॥ स्त्रियादिक ना सङ्ग ते, आलम्बन दुःख दातार रे । अशुद्ध आलम्बन छांड़ने, धर्यो ध्यान आलम्बन सार रे ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ शरणे आयो तुज साहिबा, करूं बार-म्बार नमस्कार रे । उगणीसै पूनम भाद्रवे, मुझ वर्त्या जय जयकार रे ॥ श्रे० ॥ ७ ॥

श्री बासुपूज्य जिन स्तवन ।

(इम जाप जपो श्री नवकारं ए एदेशी)

द्वादशमा जिनवर भजिये, राग द्वेष मच्छर माया तजिये । प्रभु लाल वरण तन छिव जाणी, प्रभु बासु-पूज्य भजले प्राणी ॥ १ ॥ बनिता जाणी बैतरणी, शिव सुन्दर वरवा हूंस घणी । काम भोग तज्या किम्पाक जाणी ॥ प्र० ॥ २ ॥ अञ्जन मञ्जन स्यूं अलगा, वलि पुष्प विलेपन नहीं विलगा । कर्म काप्या ध्यान मुद्रा ठाणी ॥ प्र० ॥३॥ इन्द्र थकी अधिका ओपै, करुणा-गर कदेइ नहीं कोपै । वर शाकर दूध जिसी वाणी

थया शीतलिभूत महाभाग्य हो ॥ निस्नेही ॥सू०॥४॥ इन्द्रिय नोइन्द्रिय आकरा ॥ साहेबजी ॥ दुर्जय मै दुर्दान्त हो ॥ निस्नेही ॥ ते जीता मन थिर करी ॥ साहेबजी ॥ धरि उपशम चित शान्ति हो ॥ निस्नेही ॥ ५ ॥ अन्तरजामी आपरो ॥ साहेबजी ॥ ध्यान धरूं दिन रैन हो ॥ निस्नेही ॥ उवाही दिशा कद आवसी ॥ साहेबजी ॥ होसी उत्कृष्टो चैन हो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥ ६ ॥ उगणीसे पूनम भाद्रवी ॥ साहेबजी ॥ शीतल मिलवा काज हो ॥निस्नेही॥ शीतल जिनजी मे समरिया ॥ साहेबजी ॥ हियो शीतल हुओ आज हो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥ ७ ॥

श्री श्रेयांस जिन स्तवन ।

(पुत्र वसुदेवनो एदेशी)

मोक्ष मार्ग श्रेय शोभता, धार्या स्वाम श्रेयांस उदार रे । जे जे श्रेय वस्तु संसार में, ते ते आप करी अङ्गीकार रे । ते ते आप करी अङ्गीकार, श्रेयांस जिनेश्वर प्रणमू नित्य बे कर जोड़ रे ॥ १ ॥ समिति गुप्ति दुःधर घणा, धर्म शुक्ल ध्यान उदार रे । ए श्रेय वस्तु शिव दायनी, आप आदरी हर्ष अपार रे ॥ श्रे० ॥२॥ तन चञ्चलता मेटने, पद्मासन आप बिराज रे । उतृ-

॥४॥ गुण गिरवो गंभीर धीर तूं, तूं मेटण जम त्रास।
मैं तुम वयण आगम शिर धाख्यो, तूं मुज पूरण आश
॥ सा० ॥ ५ ॥ तूं हो कृपाल दयाल तूं साहिब, शिवदा-
यक तूं जगनाथ। निश्चय ध्यान करे तुज ओलख, ते
मिले तुज संघात ॥ सा० ॥ ६ ॥ अन्तरजामी आप
उजागर, मैं तुम शरणो लीध। सम्वत् उगणीसे भाद्रवी
पूनम बंछित कार्य सिद्ध ॥ सा० ॥ ७ ॥

श्री अनंत जिन स्तवन।

(पायो युगराज पद मुनि एदेशी)

अनन्त नाम जिन चउदमा रे, द्रव्य चोथे गुणठांण
भलांजी कांई द्रव्य०। भावे जिन हुवे तेरमे रे, इतले
द्रव्य जिन जाण ॥ भलाजी कांई इतले द्रव्य जिन
जाण, पायो पद जिनराज नूं रे। शुद्ध ध्यान निर्मल
ध्याय, भलां० पायो पद ॥ १ ॥ जिन चक्री सुर जुग-
लिया रे, वासुदेव बलदेव भलां० वा०। ए पंचम गुण
पावे नहीं रे, ए रीत अनादि स्वमेव भलां० ए० ॥पा०
॥ २ ॥ संयम लीधो तिण समै रे, आया सातमें गुण
ठाण भलां० आ०। अन्तर मुहूर्त्त तिहां रही रे, छठे
वहु स्थिति जाण भलां० छ० ॥ पा० ॥ ३ ॥ आठमां
थी दोय श्रेणी छे रे, उपशम खपक पिछाण भलां० उ०
उपशम जाय इग्यारमें रे। मोह दवाव तो जाण भलां०

मो० ॥ पा० ॥ ४ ॥ श्रेणी उपशम जिन ना लहै रे, खपक श्रेणी धर खंत भ० ख० । चारित्र मोह खपावतां रे, चढिया ध्यान अत्यन्त भ० चं० ॥ पा० ॥ ५ ॥ नवमें आदि संजल त्रिहु रे, अन्त समें इक लोभ भ० अं० । दसमे सूक्ष्म मात ते रे, सागार उपयोग शोभ भ० सा० ॥ पा० ॥ ६ ॥ एकादशमो उलंघने रे, बारमें मोह खपाय भ० बा० । तिकर्म एक समै तोड़ता रे, तेरमें केवल पाय ॥ पा० ॥ ७ ॥ तीर्थ थाप योग रूंधने रे, चउदमा थी शिवपाय भ० च० । उगणीसै पूनम भाद्रवे रे, अनन्त रच्या हरषाय भ० अ० ॥ पा० ॥ ८ ॥

ओ स्तवन नीचे लिखे मुजब चालमें भी गायो जावे है ।

अनन्त नाम जिन चवदमां, जिनराय रे । द्रव्य चोथे गुण स्थान स्वाम सुखदाया रे ॥ भावे जिन हुवे तेरमें, जिनराया रे । इतले द्रव्य जिन जाण, स्वाम सुखदाया रे ॥ १ ॥

श्री धर्म जिन स्तवन ।

(भिक्षु पट भारीमाल भलके एदेशी)

धर्म जिन धर्म तणा धोरी, चटक मोहपाश नाख्या तोड़ी । चरण धर्म आतम स्यूं जोड़ी अहो प्रभु धर्म देव

ध्यारा ॥ १ ॥ शुक्ल ध्यान अमृत रस लीना, संवेग रसें करी जिन भीना। प्याला प्रभु उपशम ना पीना ॥ अ० ॥ २ ॥ जाण्या शब्दादिक मोह आला, रमणी सुख किम्पाक सम काला। हेतु नरकादिक दुःख आला ॥ अ० ॥ ३ ॥ पुद्गल शिव अरि जाण्या स्वामी, ध्यान थिर चित्त आत्म धामी। जोड़ी युग केवल नी पामी ॥ अ० ॥ ४ ॥ थाप्या प्रभु च्यार तीरथ तायो, भाख्यो धर्म जिन आज्ञा मांयो। आज्ञा बाहिर अधर्म दुःख-दायो ॥ अ० ॥ ५ ॥ व्रत धर्म धर्म जिन आख्याता, अव्रत कही अधर्म दुखदाता। सावद्य निरवद्य जु जुआ कह्या साता ॥ अ० ॥ ६ ॥ बहु जन तार मुक्ति पाया, उगणीसे आसू धुर दिन आया। धर्म जिन रटवे सुख पाया ॥ अ० ॥ ७ ॥

श्री शान्ति जिन स्तवन।

(हूं वलिहारी भीखणजी सामरी एदेशी)

शान्ति करण प्रभु शान्तिनाथजी, शिव दायक सुखकन्द की। वलिहारी हो शान्ति जिणन्द की ॥ १ ॥ अमृत वाणी सुधासी अनुपम, मेटण मिथ्या मंदकी ॥व०॥ २ ॥ काम भोग राग द्वेस कटुक फल, विष वेलि मोह धन्दकी ॥ व० ॥३॥ राक्षसणी रमणी वेतरणी। पुतली

अशुचि दुर्गंध की ॥ व० ॥ ४ ॥ विविध उपदेश देइ, जन तार्या, हूं वारी जाउं विश्वानन्द की ॥ व० ॥५॥ परम दयाल गोपाल कृपानिधि, तुज जप माला आनंद की ॥ व० ॥ ६ ॥ सम्वत् उगणीसै आसू वदी एकम, शान्ति लता सुख कन्द की ॥ व० ॥ ७ ॥

श्री कुन्थु जिन स्तवन ।

(चाल्हो तो भावना रो भूखो एदेशी)

कुंथु जिनेश्वर करुणा सागर, त्रिभुवन शिर टीकोरे । प्रभु को समरस कर नीको रे ॥ १ ॥ अद्भुत रूप अनूपम कुंथु जिन, दर्शन जग पीयको रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ वाणी सुधा सम उपशम रसनी, वालहो जग लोकोरे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ अनुकम्पा दोय श्री जिन दाखी, धर्म यो सम-दृष्टि को रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ असंयती रो जीवणा वांछे, ते सावद्य तह तीको रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ निरवद्य करुणा करी जन तार्या, धर्म ए जिनजी को रे ॥ प्र० ॥६॥ सम्वत् उगणीसै आसू वदी एकम, शरणो साहेवजी को रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥

श्री अर जिन स्तवन ।

(देवो सहियां घनड़ो ए नेम कुमार एदेशी)

अर जिन कर्म अरी नां हंता, जगत उद्धारण । जिनराज । मोमे प्यारा लागे छे जी ॥ अर जिनराज ॥

मोने वाला लागे छे जी अर महाराज ॥ १ ॥
उपसर्ग रूप अरि हण, माया केवल पाज ॥ मो
नयण न धापे निरखतांजी, इन्द्राणी सुर राज
॥ ३ ॥ वारूं रे जिनेश्वर रूप अनूपम, तूं सुगु
ताज ॥ मो० ॥ ४ ॥ वाणी विशाल दयाल प्र
भूख तृषा जावे भाज ॥ मो० ॥ ५ ॥ शर
स्वाम रे जी, अविचल सुख ने काज ॥ मो० ॥
उगणीसे आसू वदी एकम, आनन्द उपनो
मो० ॥ ७ ॥

श्री मल्लि जिन स्तवन ।

(जय गणेश ३ देवा तथा दीन दयाल जाण चरण एदे

नील वर्ण मल्लि जिनेश्वर, ध्यान निर्मल
अल्प काल मांहि प्रभु, परम ज्ञान पायो ।
जिनेश्वर नाम, समर तरण शरण आयो ॥ १
पुष्पमाल जेम, सुगन्ध तन सुहायो । सुर वधु व
भ्रमर, अधिक हो लिपटायो ॥ म० ॥ २ ॥
चक्र विविध विघ्न, मिटत तुझ पसायो । सिंवन
गजेन्द्र जेम दूर जायो ॥ म० ॥ ३ ॥ वाणी
निर्मल सुधा, रस सवेग छायो । नर सुरासु
समझ, सुणत ही हरषायो ॥ म० ॥ ४ ॥ ज
तूं ही कृपाल, जनक ज्यूं सुखदायो । वत्स

स्वाम साहिब, सुजश तिलक पायो ॥ म० ॥ ५ ॥ जप्प ज़ाप खपत पाप, तप्प हो मिटायो । मल्लि देव त्रिविधि सेव, जग अछेरो पायो ॥ म० ॥६॥ उगणीसे आसोज तीज कृष्ण सुदिन आयो, कुम्भ नन्दन कर आनन्द । हर्ष घी में गायो ॥ म० ॥ ७ ॥

श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन ।

सोरठ ।

(भरतजी भूप भयाछो वैरागी एदेशी)

सुमित्र नन्दन श्री मुनि सुव्रत, जगत नाथ जिन जाणी । चारित्र लेइ केवल उपजायो, उपशम रसनी वाणीरा ॥ प्रभुजी आप प्रबल वड़ भागी ॥१॥ त्रिभुवन दीपक सागीरा ॥ प्र० ॥ आ० ॥ ए आंकड़ी ॥ चौतीस अतिशय पैंतीस वाणी, निरखत सुर इन्द्राणी । संवेग रसनी वाणी सांभल, हर्ष स्यूं आंख्यां भराणी रा ॥ प्र० ॥ आ० ॥ २ ॥ शब्द रूप रस गन्ध अने स्पर्श प्रतिकूल न हुवे तुम आगे, ज्यूं पंच दर्शन थास्यूं पग नहीं मांडे । तिम अशुभ शब्दादिक भागे रा ॥ प्र० ॥ आ० ॥ ३ ॥ सुर कृत जल स्थल पुष्प पुञ्ज वर, ते छांडी चित दीनो । तुझ निश्वास सुगन्ध मुख परिमल, मन भमर मह्या लीनो रा ॥ प्र० ॥ आ० ॥४॥ पंचेन्द्री

सुर नर तिरि तुम स्यूं, किम हुवे दुखदायो । एकेन्द्री अनिल तजे प्रतिकूल पणुं, बाजे गमतो वायो रा ॥ प्र० ॥ आ० ॥ ५ ॥ राग द्वेष दुरदन्त ते दमिया, जीत्या विषय विकारो । दीन दयाल आयो तुज शरणे, तूं गति मति दातारो रा ॥ प्र० ॥ आ० ॥ ६ ॥ सम्वत् उगणीसे आसोज तीज कृष्ण, श्री मुनि सुव्रत गाया । लाडनूं शहर मांहि रूड़ी रीतें आनन्द अधिको पाया रा ॥ प्र० ॥ आ० ॥ ७ ॥

श्री नमि जिन स्तवन ।

(परम गुरू पूज्यजी मुज प्यारा रे पदेशी)

नमि नाथ अनाथां रा नाथो रे, नित्य नमण करूं जोड़ी हाथो रे । कर्म काटण वीर विख्यातो, प्रभु नमि-नाथजी मुझ प्यारा रे ॥१॥ प्रभु ध्यान सुधा रस ध्याया रे, पद केवल जोड़ी पाया रे । गुण उत्तम उत्तम आया ॥ प्र० ॥ २ ॥ प्रभु वागरी वाण विशालो रे, खीर समुद्र थी अधिक रसालो रे । जग तारक दीन दयालो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ थाप्या तीर्थ च्यार जिणन्दो रे, मिथ्या तिमिर हरण ने मुणन्दो रे । त्यांने सेवे सुर नर वृन्दो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ सुर अनुत्तर विमाण ना सेवे रे, प्रश्न पूछ्यां उत्तर जिन देवे रे । अवधि ज्ञान करी जाण लेवे ॥ प्र० ॥५॥ तिहां वैठा ते तुम ध्यान ध्यावे रे, तुम योग मुद्रा चित्त

अडिग जिनवर। सुर गिर जेम सधीर ॥ नहीं ॥ १ ॥ संगम दुःख दिया आकरा रे, पिण सुप्रसन्न निजर दयाल। जग उद्धार हुवे मो थकी रे, ए डूबे इण काल ॥ नहीं ॥ २ ॥ लोक अनार्य बहु किया रे, उपसर्ग विविध प्रकार। ध्यान सुधा रस लीनता जिन, मन सें हर्ष अपार ॥ नहीं ॥ ३ ॥ इण पर कर्म खपाय ने प्रभु, पाया केवल नाण। उपशम रस मय वागरी प्रभु, अधिक अनूपम वाण ॥ नहीं ॥ ४ ॥ पुद्गल सुख अरि शिव तणा रे, नरक तणा दातार। छांडि रमणी किम्पाक वेलि, संवेग संयम धार ॥ नहीं ॥ ५ ॥ निन्दा स्तुति सम पणे रे, मान अने अपमान। हर्ष शोक मोह परिहर्यां रे, पामे पद निर्वाण ॥ नहीं० ॥ ६ ॥ इम वहु जन प्रभु तारिया रे, प्रणमुं चरम जिनेन्द। उगणीसे आसोज चोथ वदी, हुवो अधिक आनन्द ॥नहीं०॥७॥

इति श्री भीखणजी स्वामी तस्य शिष्य भारीमालजी स्वामी, तस्य शिष्य रिषरायचन्दजी। स्वामी तस्य शिष्य जीतमलजी स्वामी कृत चतुर्विंशति जिन स्तुति समाप्तः।

नवकार नी पाटी ।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए, सव्व साहूणं ।

सामायक लेने की पाटी ।

करेमि भंते सामायियं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियम (मुहूर्त्त एक) पज्जवा सामि दुविहिं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वायसा कायसा तस्स भंते पड़िक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ।

सामायक पारणे की पाटी ।

नवमा सामायक व्रत नें विषे ज्यो कोई अतिचार दोष लागो हुवे तो आलोऊं १ सामायक में सुमता न कीधी विकथा कीधी हुवे श्रण पूरी पारी होय पारवो विसार्यो होय मन वचन काया का जोग माठा परवर्ताया होय सामायक में राज कथा देश कथा स्त्री कथा भत्त कथा कारी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

अथ सीमंदर स्वामीजी रो स्तवन।

(राग खटमल री)

सीमन्दर स्वामी, तुम दरशण री हूं कामी हो। ॥ जिनजी दरशण री बलिहारी ॥ विनय करी मन मोड़ी, नित वान्दूं वे कर जोड़ी हो ॥ जि० ॥ १ ॥ महाविदेह मझारी, पुण्डरिकणी नगरी भारी हो ॥ जि० ॥ श्रेयांस नृप सुखकारी, सतकी नामे तसु नारी हो ॥ जि० ॥२॥ उत्तम कुल उदारी, तठे आप लियो अवतारी हो ॥ जि० ॥ सुपना लह्या दश च्यारी, हिवड़ा हरख अपारी हो ॥ जि० ॥ ३ ॥ शुभ मुहूर्त्त तुम जाया, जब सुरपति मिलने आया हो ॥ जि० ॥ मोहछव भारी कीधो, तुम नाम सीमंदर दीधो हो ॥ जि० ॥ ४ ॥ दिन २ वधे जिम वाणी, तृण ज्ञान सकल गुण खाणी हो ॥ जि० ॥ परण्या रुखमणा नारी, बहु लील करी संसारी हो ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोह माया सब त्यागी, घर छोड़ हुवा वैरागी हो ॥ जि० ॥ घातिया कर्म खपाया, जद केवल पदवी पाया हो ॥ जि० ॥ ६ ॥ मिल आया सुर नर नारी, देशना दीधी हितकारी हो ॥ जि० ॥ भीज गया भव प्राणी, चो संग

थया गुणखाणी हो ॥ जि० ॥७॥ पांच ने तीस बखाणी, मीठी तुम अमृत बाणी हो ॥ जि० ॥ अतिशय तीस ने च्यारी, आप उत्कृष्टा उपगारी हो ॥ जि० ॥ ८ ॥ गुण निध दीन दयाला, किया तीन भुवन उजयाला हो ॥ जि० ॥ सुर तरु ध्येन समानो, तुम समयां मोक्ष सुथानो हो ॥ जि० ॥ ९ ॥ सुन्दर देही सोहे, सुर मानव रो मन मोहे हो ॥ जि० ॥ लुल २ पाये लागे, कर जोड़ खड़्या रहे आगे हो ॥ जि० ॥ १० ॥ मन उमाहो मांहरे, जाणे रहूं पास तुमारे हो ॥ जि० ॥ वाणी सुण नित नेमो, प्रश्न पूछूं धर प्रेमो हो ॥ जि० ॥ ११ ॥ अन्तराय कर्म मुझ भारी, लियो भरत मझे अवतारी हो ॥ जि० ॥ पिण हूं बचनां रो रागी, खोटी सरधा सब त्यागी हो ॥ जि० ॥ १२ ॥ भूल गया लेइ भेषो, कर रह्या फेन बिशेषो हो ॥ जि० ॥ पिण हूं सगलां स्यूं न्यारो, तुम मारग लागे प्यारो हो ॥ जि० ॥ १३ ॥ मोर मन जिम मेहा, नर नारी इधक सनेहा हो ॥ जि० ॥ चकोर चाहे जिम चन्दा, चकवा मन जेम दिनन्दा हो ॥ जि० ॥ १४ ॥ केतकी भमरज ध्यावे, कदली मन कुञ्जर चावे हो ॥ जि० ॥ बालक जिम मन माता, हंस मान सरोवर राता हो ॥ जि० ॥ १५ ॥ पपैयो चावे पाणी, खुदियातुर अन्न पिछाणी हो ॥ जि०॥

गागर चित पणिहारी, वंश ऊपर नट विचारी हो ॥ जि० ॥ १६ ॥ ईर्या पथ ऋष ध्यानां, काजी मन जेम कुराना हो ॥ जि० ॥ इम धरूं ध्यान तुमारा, अन्य देव तज्या मैं सारा हो ॥ जि० ॥१७॥ पूरव लाख तियासी, जिन आप रह्या घर वासी हो ॥ जि० ॥ लाख पूरव री दीचा, तुम देवो रूड़ी शिचा हो ॥ जि० ॥ १८ ॥ तास्या घणा नर नारी, मेल्या शिवगत मझारी हो ॥ जि० ॥ चार कर्म करी अन्त, लहस्यो शिव सुख अनन्त हो ॥ जि० ॥ १९ ॥ क्रोड़ कवि गुण गावे, पिण पार कदे नहीं पावे हो ॥ जि० ॥ बुद्ध माफक तवन जोड़ी, ए तवन कियो धर कोड़ी हो ॥ जि० ॥ २० ॥ आपणा पर उपगार, फतेपुर शहर मझार हो ॥ जि० ॥ ऋष चन्द्रभाण गुण गाया, भले भवियण रे मन भाया हो ॥ जि० ॥ २१ ॥

श्री कालू गणिराज के गुणा की ढाल ७ टी ।

उमराव थाँरी बोली प्यारी लागे मेरी जान (एदेशी)

हो गणिराज थारो शासन अधिको दीपे मोरा स्वाम । हो महाराज थारी बोली प्यारी लागे मोरा स्वाम ॥ १ ॥ भरते भिचु आदि जिनन्द जिम आय लियो अवतार । भव जीवां ने तारवा काढ्यो मारग

सार हो ॥ २ ॥ तसु अष्टम पाट विराज्या श्री कालू गणी महाराज। मेहर करी म्हां ऊपर दियो चौमासो कराय हो ॥ ३ ॥ ठंडीरामजी सन्त विराज्या दिया घणां जीवां ने समभाय। भव जीवां ने तारवा कांई आप बड़ा मुनिराय हो ॥ ४ ॥ अब उदासर की यह विनती सुन लीज्यो महाराज। सित्यासी के साल को दो चौमासो फरमाय हो ॥ ५ ॥ भायां वायां रे सीखण सुणन की लग रही मन में चाव। जल्दी हुकम फरमावो मुझने होवे घणो उछाव हो ॥ ६ ॥ टीकू तोलू की यह विनती कर लीज्यो प्रमाण। अरजी सुणने मरजी कीज्यो चौमासो चित्त आण हो ॥ ७ ॥ सम्वत् उगणीसै साल छीयासी माघ मास में आस। शुक्लपक्ष सप्तमी दिन दास करे अरदास हो ॥ ८ ॥

॥ ढाल २ जी ॥

लिछमन मूर्छा खाई जब धरण पड़े रघुराई हाहाकार मचाई (पदेशी)

पांचमे आरे पीछानो, श्री आदि जिनन्द जिम जानो। प्रगटे श्री भिक्षुनाणी, भवि हित काम काम काम ॥ निस दिन ध्याऊं हो गणि नाथ, आप रो नाम नाम नाम ॥ १ ॥ तसु अष्टम पाटे नीको, मूलचन्दजी रो कीको। यह चहुं तीरथ सिर टीको, कालू स्वाम २। निस दिन ध्याऊं हो गणिनाथ, आपरो

नाम नाम नाम ॥ २ ॥ चंद पूनम नो नीको, ज्यूं सती छोगांजी को कीको। ज्ञान गुणां करी तीखो, तपे ज्यूं भान २ ॥ निस दिन ध्याऊं हो गणिनाथ आप रो ध्यान २ ॥३॥ थांरी कीरति जग में छाई, तब पाखण्ड धूम मचाई। गणि शिष्य गये तिहां ध्याई, भवि साख्या काम २ ॥ ४ ॥ उत्तम ज्यूं मुनिवर पेखी, पाखण्डा री गम गई सेखी। नाथा सो विसेखी, राखन माम २ ॥५॥ प्रभु मुझ पै कृपा कीजै, एक शिवरमनी बकसीजै। चाकर पे मेहर राखीजै, अपनो जान २ ॥ ६ ॥ आज भलो दिन आयो, हूं दरशन कर सुख पायो। छैया-सोक मंग उमायो, कहे ठंडीराम २ ॥ निस दिन ध्याऊं हो गणिनाथ आपरो नाम नाम नाम ॥ ७ ॥

॥ ढाल ३ री ॥

कलाली भैरूं विलमायो ए भैरूं विलमायो ए (पदेशी)

सुगण जन कालू गुण गावो रे, कालू गुण गावो रे। थांरा भव २ पातक जाय, चेतानन्द प्रभु गुण गावो रे ॥ ए आंकड़ी ॥ १ ॥ शहर छापर अति दीपतोजी, कांई ओस वंश सुखकार ॥ चेतानन्द ॥ जात कोठारी दीपताजी, कांई मूलचन्द घर सार ॥ सुगण ॥ २ ॥ सुभठामें थी चवी करी जी, कांई पुन्यवन्त जीव उदार छोगांजी के कूख में जी, कांई आन लियो

अवतार ॥ सु० ॥ ३ ॥ उगणीसे तेतीसमें जी, कांई फागण मास मझार ॥ चे० ॥ शुभ नक्षत्र आवियोजी, कांई प्रसव्यो पुत्र उदार ॥ सु० ॥ ४ ॥ जिन मारग दीपाव्यो जी, कांई भिन २ दिया रे समझाय ॥ चे० ॥ बुद्धि उतपात थांहरी घणी जी, कांई सीख्या सूत्र अथाय ॥ सु० ॥ ५ ॥ उगणीसै चमालीस में जी, कांई लीधो संयम भार ॥ चे० ॥ गुण कठे लग बरणवूं जी, कांई कहता न आवे पार ॥ सु० ॥ ६ ॥ चौमासो चाहूँ सास्तो जी, कांई भव जीव बसो जिन धर्म ॥ चे० ॥ मुनि ठंडीरामजी बताव्यो जी, कांई असल धर्म नो मर्म ॥ सु० ॥ ७ ॥ उगणीसै छियासी समै जी, कांई माघ मास शुक्ल मझार ॥ चे० ॥ टीकू तोलू इम विनवे जी, कांई निज मुख बार हजार ॥ सु० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥

(उमादे भटियाणी की एदेशी)

पहली तो सुमिरूं हो ऋषभादिक महावीर ने, कांई बरते जय जयकार। गुण ओलखने गावे हो। सुख पावे दुःख दूरा टले, कांई नाम लिया निस्तार ॥ १ ॥ भिक्षु गणि सुखकारी हो, गुणधारी मुरधर देसे। कांई ग्राम कंटालियो जान, सूत्र सिद्धान्त वांच्या हो ॥ रस खांच्या संयम पालवा, कांई गुण रतना की खान

॥ २ ॥ तसु अष्टम पट कालू स्वामी हो, शिवगामी साहिब शोभता, कांई महा गुणां री खान। साध सतियां में दीपे हो मन मोहवा, भवियण जीव ने कांई तपे जानु भान ॥ ३ ॥ ठंडीरामजी स्वामी हो विराज्या, उदाशहर में, कांई भिन २ दिया रे समझाय। केई भाया वायां नहीं आता हो आलस्य संकोच सूं, कांई आय नम्या तसु पाय ॥ ४ ॥ वाणी सुण हरषाया हो ते समकित लीधी केई जना, कांई होयो घणा उपगार। केई श्रावक रा व्रत लीधा हो ते कीधा त्याग, वैराग स्यूं कांई जाण्यो जिन धर्म सार ॥ ५ ॥ भिक्षु गण में भारी हो गुणधारी, साध ने साध्वी कांई पण्डित चतुर सुजाण। उत्तम २ कुल का हो गुणवन्त आज्ञा में रहे, कांई लेवा सुख नी खान ॥ ६ ॥ कार्तिक वदी चवदश हो, साल छीयासी को जानिये। कांई उदासर मझार, टीकू तोलू गुण गावे हो ॥ सुख पायो आप प्रसाद थी, कांई सेवा करो नर नार ॥ ७ ॥

श्री जयाचार्य कृत—

भ्रम विध्वंसन की हुराडी।

मिथ्यात्वि क्रियाऽधिकारः।

१ बाल तपस्वी ने सुपात्र दान, दया, शीलादि करी मोक्षमार्ग नों देश थकी आराधक कह्यो।

(साख सूत्र भगवती श० ८ उ० १०)

२ प्रथम गुणठाणा नो धणी सुमुख नामे गाथापति, सुदत्त नामा अणगार ने सुपात्र दान देई परित संसार करी मनुष्य नो आउषो बांध्यो।

(साख सूत्र सुखविपाक अ० १)

३ मेघकुमार को जीव मिथ्याती थको हाथी के भव में सुसला री दया पाली परित संसार कीधो।

(साख सूत्र ज्ञाता अ० १)

४ गोशाला नो श्रावक सकडालपुत्र, भगवान ने त्रिण प्रदक्षिणा देई वंदना कीधी।

(उपाशक दशांग अ० ७)

५ मिथ्याती ने भली करणी लेखे सुव्रती कह्यो छे।

(साख सूत्र उत्तराध्ययन अ० ७ गा० २०)

६ क्रियावादी सम्यग्दृष्टि (मनुष्य तिर्यंच) एक वैमानिक टाल और आऊषो न बांधे ।

(साख सूत्र भगवती ३० उ० १)

७ मिथ्याती मास २ खमण तप करै तथा सुई नी अग्र पै आवै तेतलाज अन्न नो पारणो करै, पिण सम्यग्दृष्टि ना चारित्र धर्म नी सोलमी कला पिण नावै तेहनो न्याय ।

(उत्तराध्ययन अ० ६ गा० ४४)

८ मिथ्याती मास २ खमण तप करै, पिण माया थी अनन्त संसार रुलै ।

(सूयगडांग श्रुतस्कन्ध १ अ० २ उ० १ गा० ६)

६ जीव अजीव जाणे नहीं तेहना पच्चखाण दुपच्चखाण कह्या तेहनो न्याय ।

(भगवती श० ७ उ० २)

१० भगवत दीक्षा लियां पहली, २ वर्ष झाझा (अधिका) घर में विरक्त पणे रह्या तथा काचो पाणी न भोगव्यो ।

(प्रथम आचाराङ्ग अ० ६ उ० १ गा० ११)

११ जे तत्त्व ना अजाण मिथ्याती, त्यांरो अशुद्ध प्राक्रम छै ते संसार नो कारण छै । पिण निर्जरा नो कारण नथी (पिण शुद्ध प्राक्रम तो निर्जरा

नोहिज कारण छै, संसार नो कारण नथी।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ८ गा० २३)

(क) सम्यग्दृष्टि नो शुद्ध प्राक्रम छै, ते सर्व निर्जरा नो कारण पिण संसार नो कारण नथी (पिण अशुद्ध प्राक्रम तो संसार नोहिज कारण, निर्जरा नो कारण नथी।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ८ गा० २४)

१२ भगवंत दीख्या लेतां इम कह्यो—आज थी सर्वथा प्रकारे मोने (मुझ ने) पाप करवो कल्पै नहीं। इम कही सामायक चारित्र आदरयो।

(अचाराङ्ग श्रु० २ अ० १५)

१३ एक बेला रा कर्म बाकी रह्यां अनुतर विमाण में जाई उपजे।

(भगवती श० १४ उ० ७)

१४ प्रथम गुणस्थान नी शुद्ध करणी छै, ते आज्ञा मांय छै। तेहनो न्याय।

१५ प्रथम गुणस्थान ने निर्वद्य कर्म नो क्षयोपशम कह्यो।

(समवायांग समवाय १४)

१६ अप्रमादी साधु ने अणारम्भी कह्या।

(भगवती श० १ उ० १)

१७ असोच्चाकेवली अधिकारे इम कह्यो—तपस्यादिक थी समदृष्ट पामै ।

(भगवती श० ६ उ० ३१)

१८ सूरियाभ ना अभियोगिया देवता भगवान ने वांद्यां तिवारे भगवान कह्यो—ए वन्दना रूप तुम्हारो पुराणो आचार छै १ ए तुम्हारो जीत आचार छै २ ए तुम्हारो कार्य छै ३ ए वंदना करवा योग्य छै ४ ए तुम्हारो आचरण छै ५ ए वंदना नी म्हारी आज्ञा छै ६ ।

(रायप्रसेणी देवताधिकार)

१९ खन्धक सन्यासी, गोतम ने पूछ्यो, हे गोतम ! तुम्हारा धर्माचार्य महावीर ने वांदां यावत् सेवा करां । तिवारे गोतम कह्यो, हे देवानुप्रिय ! जिम सुख होवे तिम करो पिण विलम्ब मत करो ।

(भगवती श० २ उ० १)

(क) दीक्षा नी आज्ञा पर भगवत पार्श्वनाथ 'अहं सुहं' पाठ कह्यो ।

(पुप्फ चूलिया)

२० भगवत श्री महावीर, खन्धक ने पड़िमा वहवानी आज्ञा दीधी ।

(भगवती श० २ उ० १)

२१ तामली तापसनो अनित्य चिन्तवना।

(भगवती श० ३ उ० १)

२२ सोमल ऋषिनो शुद्ध चिन्तवना।

(पुष्फयोपांग अ० ३)

२३ छद्मस्थ भगवान श्रीमहावीर नी अनित्य चिन्तवना।

(भगवती श० १५)

२४ अनित्य चिन्तवना ने धर्म ध्यान को भेद कह्यो।

(उववाई)

२५ च्यार प्रकारे देवायु बांधे—सराग संजम पाली १ श्रावक पणो पाली २ बाल तप करी ३ अकाम निर्जरा करी ४ तथा च्यार प्रकारे मनुष्यायु बांधे—प्रकृति भद्रिक १ प्रकृति विनीत २ दया परिणाम ३ अमत्सर भाव।

(भगवती श० ८ उ० ९)

२६ गोशाले के शिष्यां के च्यार प्रकार नो तप कह्यो—उग्र तप १ घोर तप २ रस परित्याग ३ जीभ्या इन्द्री वश कीधी।

(ठाणांगठाणे ४ उ० २)

२७ अन्यदर्शणी पिण सत्य वचन ने आदरो।

(प्रश्न व्याकरण संवरद्वार २)

२८ वाण व्यन्तर ना देवता देवी वनखण्ड ने विषे वैसे, सूवे जाव क्रीड़ा करे। पूर्व भवे भला प्राक्रम

फोडव्या तेहना फल भोगवै।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

२६ मिथ्याती प्रकृति भद्रादि गुण थी वाणव्यन्तर देवता थाय।

(उववाई प्रश्न ७)

दानाऽधिकारः।

---

१ असंयती ने दीधां पुन्य पाप को न्याय।

२ आणन्द श्रावक इह विधि अभिग्रह लीधो—जे हूं आज थकी अन्य तीर्थी ने अन्य तीर्थी ना देव ने तथा अन्य तीर्थी ना ग्रह्या अरिहन्त ना चैत्य साधु भ्रष्ट थया। ए तीना प्रति वांदूं नहीं, नमस्कार करूं नहीं, अशनादिक देऊं नहीं, देवाऊं नहीं, विना बतलायां एक वार तथा घणी वार बोलाऊं नहीं, तथा अशनादिक च्यार आहार देऊं नहीं। अनेरा पास थी दिराऊं नहीं। पिण एतलो आगार—राजा ने आदेशे आगार १ घणा कुटुम्ब ने समुदाय ना आदेशे आगार २ कोई एक बल-वन्त ने परवश पणे आगार ३ देवता ने परवश पणे आगार ४ कुटुम्ब में वडेरो ते गुरु कहिये

तेहने आदेशे आगार ५ अटवी कान्तार ने विष आगार ६ ए छव छराडो आगार राख्या तो पोता री कचाई जाणी ने राख्या ।

(उपाशक दशाँग अ० १)

३ तथा रूप जे असंयती ने फासू अफासू सूझतो असूझतो अशनादिक दीधां एकान्त पाप निर्जरा, नथी ।

(भगवती श० ८ उ० ६)

४ जे साधु कष्ट उपना एम विचारै । जे अरिहन्त भगवन्त निरोगी काया ना धणी, पोता ना कर्म खपावा ने उदेरी ने तप करै । तो हूं लोच ब्रह्मचर्यादिक अनेक रोगादिक नी वेदना, किम न सहूं । एतले मुझ ने वेदना सम भावे न सहतां, एकान्त पाप कर्म हुवे तो वेदना समभावे सहतां, एकान्त निर्जरा हुवे ।

(ठाणाँगठाणे ४ उ० ३)

५ साधु नी हेला निन्दा करतो अशनादि देवै तिहां "पडिलाभित्ता" पाठ कह्यो ।

(भगवती श० ५ उ० ६)

(क) तथा साधु ने वंदना नमस्कार करतो थको

अशनादिक देवे तिहां पिण 'पड़िलाभित्ता"
पाठ कह्यो ।

(भगवती श० ५ उ० ६)

६ पोट्टिला आर्या महासती ने अशनादिक दीधा तिहां "पडिलाभे" पाठ कह्यो । ते माटे "पडिलाभेइ" नाम देवा नों छै पिण साधु असाधु जाणवा रो नहीं ।

(ज्ञाता अध्ययन १४)

७ साधु ने अशनादिक वहिरावै तिहां "दलएज्जा" पाठ कह्यो छै । ते माटे "दलएज्जा" कहो भावे "पडिलाभेज्जा" कहो दोनों एक अर्थ छै ।

(आचारांग श्रु० २ अ० १ उ० ७)

८ सुदर्शन सेठ शुकदेव सन्यासी ने अशनादिक आप्यो तिहां "पडिलाभमाणे" पाठ कह्यो ।

(ज्ञाता अ० ५)

९ 'पडिलाभ' नाम देवा नोहिज छै ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ५ गा० ३३)

१० आर्द्र मुनि ने विप्रां कह्यो—जो वे हजार कहतां दो हजार ब्राह्मण जिमावे ते महा पुन्य स्कन्ध उपार्जी देवता हुई । एहवो हमारे वेद में कह्यो छै । तिवारे आर्द्र मुनि बोल्या, हे विप्रों ! जे

मांस ना अटद्दी घर २ ने विषे मार्जार नी परै भ्रमण करणहार एहवा बे हजार कुपात्र ब्राह्मणां ने नित्य जिमाड़े ते जिमाड़नहार पुरुष ते ब्राह्मणां सहित बहु वेदना छै जेहने विषे एहवी महा असह्य वेदना युक्त नरक ने विषे जाइ । अने दया रूप प्रधान धर्म नी निन्दाना करणहार हिंसादिक पञ्च आस्रव नो प्रशंसाना करणहार एहवो जो एक पिण दुःशील-वन्त निर्ब्र तो ब्राह्मण जिमाड़े ते महा अन्धकारयुक्त नरक में जाइ । तो जे एहवा घणा कुपात्र ब्राह्मणा ने जिमाड़े तेहनो स्यूँ कहिवो । अने तमें कहो छो जे जिमाड़णहार देवता हुइ तो हमें कहां छां जे एहवा दातार ने असुरादिक अधम देवता नी पिण प्राप्ति नहीं, तो जे उत्तम वैमाणिक देवता नी गति नी आशा एकान्त निराशा छै ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ६ गा० ४३, ४४, ४५)

११ भृगु ने पुत्रां कह्यो, वेद भण्यां ताण शरण न हुवे तथा ब्राह्मण जिमायां तमतमा जाय । (तमतमा ते अंधारा से अधारो) एहवी नर्क ।

(उत्तराध्ययन अ० १४ गा० १२)

१२ श्रावक पिण विप्र जिमाड़े तेहनो न्याय च्यार प्रकारे नर्कायु बांधे तिणेकरी ओलखायो ।

(भगवती शतक ८ उ० ६)

(क) वलि श्रावक पिण विप्र जिमाड़े तिण ऊपर बालमर्ण थी अनंता नर्क ना भाव। तेहनो न्याय।

(भगवती श० २ उ० १)

१३ जे सावद्य दान प्रशंसे तेहने छःकाय नो वध नो वंछणहार कह्यो। अने वर्त्तमान काले निषेधे त्यांने अन्तराय नो पाड़णहार कह्यो। ते माटे साधु ने वर्त्तमान में मौन राखिवे कही।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ११ गा० २०, २१)

१४ दान देवे लेवे, इसो वर्त्तमान देखी गुण दूषण कहणो नहीं।

(सूयगडाँग श्रु० २ अ० ५ गा० ३३)

१५ नन्दण मणिहारो दानशालादिक नो घणो आरम्भ करी मरीने पोतारी वावड़ी मेंज डेडको थयो।

(ज्ञाता अ० १३)

१६ भगवान दश प्रकार ना दान प्ररूप्या। (सावद्य निर्वद्य ओलखणा)

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

१७ दश प्रकार नो धर्म कह्यो (सावद्य निर्वद्य ओलखणा) अने दश प्रकार ना स्थविर कह्या लौकिक लोकोत्तर विहुं जाणवा।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

१८ नव विधि पुण्य कह्यो (सावद्य निर्वद्य ओलखणा)

(ठाणाङ्ग ठाणे ६)

१९ च्यार प्रकार ना मेह तिमहिज च्यार प्रकार ना पुरुष, कुपात्र ने कुखेत्र जिसा कह्या।

(ठाणाङ्ग ठाणे ४ उ० ४)

२० शकडालपुत्र गोशाला प्रते कह्यो—हे गोशाला ! तूं मांहरा धर्माचार्य श्री महावीर ना गुणकीर्तन कस्या। ते माटे देऊं छूं तुमने पीठ, फलग, सिज्यादि। पिण धर्म तप ने अर्थे नहीं।

(उपाशकदशा अ० ७)

२१ मृगालोढा प्रति देखने गौतम, भगवान ने पूछ्यो—हे भगवन्त ! इण पूर्व भवे कांई कुपात्र दान दीधा ? कांई कुशीलादि सेव्या ? अने कांई मांसादि भोगव्या ? तेहना फल ए नर्क समान दुःख भोगवे छै। तो जोवोनी कुपात्र दान ने चौड़े भारी कुकर्म कह्यो।

(दुःखविपाक अ० १)

२२ ब्राह्मणां ने पापकारी खेत्र कह्या।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० १४)

२३ पन्द्रह कर्मदान ने व्यापार कह्या।

(उपाशकदशा अ० १)

२४ भात पाणी थी पोष्यां धर्माधर्म नो न्याय।

(उपाशकदशा अ० १)

२५ तुंगिया नगरी ना श्रावकां नो उघाड़ा बारणा रो न्याय।

(भगवती श० २ उ० ५ टीका में)

२६ श्रावक ना त्याग ते व्रत अने आगार ते अव्रत।

(उववाई प्रश्न २० तथा सूयगडाँग श्रु० २ अ० २)

२७ दश प्रकार ना शस्त्र काह्या तिणमें अव्रतने भाव शस्त्र काह्यो।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

२८ जे श्रावक देशथकी निवर्त्यो अने देशथकी पच्चखाण कीधा तिणे करी देवता थाय। पिण अव्रत थी देवता न हुवे।

(भगवती श० १ उ० ८)

२९ साधु ने सामायक में बहिरायां सामायक न भांगे तेहनो न्याय।

(भगवती श० ८ उ० ५)

३० श्रावक जिमावे तिण ऊपर महावीर पार्श्वनाथ ना साधु नो न्याय मिले नहीं।

(उत्तराध्ययन अ० २३ गा० १७)

३१ असोच्चा केवली, अन्यलिंगी थकां पोते तो दीख्या

न देवे। पिण अनेरा पासे दीख्या लेवा नो उपदेश करे।

(भगवती श० ६ उ० ३१)

३२ अभिग्रहधारी अने परिहार विशुद्ध चारित्रियो कारण पड्यां अनेरा साधु ने अशनादि देवे।

(वृहत्कल्प उ० ४ बोल २७)

३३ गृहस्थादिक ने देवो साधु संसार भ्रमण नो हेतु जाणी छोड्यो।

(सूयगडाँग श्रु० १ अ० ६ गा० २३)

३४ गृहस्थी ने दान दियां अने देतां ने अनुमोद्यां चौमासी प्रायश्चित कह्यो।

(निशीथ उ० १५ बोल ७४-७५)

३५ आणन्द ने संथारा में पिण गृहस्थ कह्यो।

(उपासकदशा अ० १)

३६ गृहस्थोनी व्यावच कियां, करायां, वलि अनुमोद्यां २८ मो अणाचार कह्यो।

(दशवैकालिक अ० ३ गा० ६).

३७ इग्यारमी पड़िमा में पिण प्रेम बंधण तूट्यो नथी।

(दशा श्रुतस्कन्ध अ० ६)

३८ पड़िमाधारी रे कल्प ऊपर अम्बड़ सन्यासी ना कल्प नो न्याय।

(उववाई प्रश्न १४)

३९ अनेरा सन्यासी नो कल्प।

(उववाई प्रश्न १२)

४० वर्ण नाग नतुओ संग्राम में गयो तिहां एहवो अभिग्रह धार्यो—कल्पै मुझने जे पूर्वे हणै तेहने हणवो। जे न हणै तेहने न हणवो।

(भगवती श० ७ उ० ६)

४१ जे एकेक अन्यतीर्थी थकी गृहस्थ श्रावक देश व्रते करी प्रधान अने सर्व श्रावक थकी साधु सर्व व्रते करी प्रधान।

(उत्तराध्ययन अ० ५ गा० २०)

४२ श्रावक नी आत्मा अधिकरण कही छै। अधिकरण ते छवकाय नो शस्त्र जाणवो।

(भगवती श० ७ उ० १)

(क) भरतजी थी घोड़े ने ऋषि की उपमा दीधी। तिमहिज श्रावक ने 'समण भुया' कह्यो पिण ते देशथकी उपमा जाणवी।

(जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति)

४३ च्यार व्यापार कह्या—मन, वचन, काया और उपकरण। ए च्यारूं व्यापार सन्नी पंचेन्द्रियरे कह्या। ए च्यारूं भूंडा व्यापार पिण १६ दण्डक सन्नी पंचेन्द्रियरे कह्या। अने ए च्यारूं भला व्यापार तो संयती मनुष्यांरेइज कह्या।

(ठाणाङ्ग ठाणं ४ उ० १)

अनुकम्पाऽधिकारः ।

१ असंयती जीवां रो जीवणो वांछणो घणे ठामे वर्ज्यो ते साख रूप बोल ।

२ पोताना कर्म खपावा तथा अनेरा (आर्य क्षेत्र ना मनुष्य) ने तारिवा निमित भगवान धर्म कहे । पिण असंयती जीवा ने बचावा अर्थे नहीं ।

(सूयगडाँग श्रु० २ अ० ६ गा० १७-१८)

३ पोताना पाप टालवा भणी नेमनाथ भगवान पाछा फिरया ।

(उत्तराध्ययन अ० २२ गा० १८-१६)

४ मेघकुमार नो जीव हाथी ने भवे सुसलानी अनुकम्पा कीधी, सुसला ने त्रस नामे करी बोलायो ।

(ज्ञाता अ० १)

(क) तथा मढाई निग्रन्थ ने छः नामे करी बोलायो ।

(भगवती श० २ उ० १)

५ पडिमाधारी नो कल्प 'वहाय गहाय' पाठ नो अर्थ ।

(दशाश्रुतस्कन्ध अ० ७)

६ रागद्वेष आणी 'मार तथा मत मार' इम कहिवो वर्ज्यो ।

(सूयगडाँग श्रु० २ अ० ५ गा० ३०)

७ गृहस्थां मे मांही मांही लड़ता देखी—एहने हण

तथा एहने मत हणा एहवो मन में पिण विचार न करै ।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १)

८ गृहस्थी ने, साधु 'अग्नि प्रज्वाल तथा बुझाव' इम न कहै ।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १)

९ दश प्रकार नी वांछा कही ।

(ठाणांग ठाणे १०)

१० असंयम जीवितव्य वांछणो वर्ज्यो ।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० १० गा० २४)

११ असंयम जीवणो मरणो वांछणो वर्ज्यो ।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० १३ गा० २३)

१२ साधु असंयम जीवितव्य ने पूठ देई विचरै ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १५ गा० १०)

१३ असंयम जीवणो वांछणो वर्ज्यो ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ३ उ० ४ गा० १५)

१४ असंयम जीवणो वांछै तिणने बाल अज्ञानी कह्यो ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ५ उ० १ गा० ३)

१५ साधु आपणी आत्मा ने असंयम जीवितव्य को अर्थी न करै ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १० गा० ३)

१६ असंयम जीवणो वांछणो वर्ज्यो ।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १६)

१७ संयम जीवितव्य बधारवो कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० ४ उ० ७)

१८ संयम जीवितव्य दुर्लभ कह्यो ।

(सूयगडाँग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १)

१६ मिथिला नगरी बलती देखी, नमीराजर्षि साह्मो न जोयो । वलि कह्यो म्हारै राग द्वेष करवा माटै बाह्लो दुबाह्लो एक पिण नहीं । ए मिथिलापुरी बलतां थकां मांहरो किञ्चित मात्र पिण बलै नथी। मैं तो (संयम में सुख से जीवूं अने सुख से वसूं छूं ।

(उत्तराध्ययन अ० ६ गा० १२-१३-१४-१५)

२० देवता, मनुष्य, तिर्यञ्च ए तीनां नूं माहों मांही विग्रह देखी अमुक नी जय होवो अने अमुक नी अजय होवो एहवो वचन साधु ने बोलणो नहीं ।

(दशवैकालिक अ० ७ गा० ५०)

२१ वायरो, वर्षा, सीत, तावड़ो, राज विरोध रहित, सुभिक्ष पणो, उपद्रव रहित पणो, ए सात बोल हुवो इम साधु ने कहिवो नहीं ।

(दशवैकालिक अ० ७ गा० ५१)

२२ समुद्रपाली चोर ने मरतो देखी वैराग्य पामी चारित्र लीधो पिण चोरनी अनुकम्पा करि छोडायो नथी ।

(उत्तराध्ययन अ० २१ गा० ६)

२३ जे साधु पोतानी अनुकम्पा करै पिण अनेरा नी अनुकम्पा न करै ।

(ठाणाँग ठाणे ४ उ० ४)

२४ अन्यतीर्थी तथा गृहस्थ मार्ग भूलाने साधु मार्ग बतावै तो चौमासी प्रायश्चित आवै ।

(निशीथ उ० १३ बोल २५)

२५ हिंसादिक अकार्य करता देखी, धर्मउपदेश देई समझावणो तथा अणबोल्यो रहै तथा उठी एकान्त जाणवो कह्यो ।

(ठाणाँग ठा० ३ उ० ३)

२६ साधु अनेरा जीवां ने भय उपजावै, तो प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० ११ बोल ६४)

२७ गृहस्थ नी रक्षा निमित्त मन्त्रादिक कियां वलि-अनुमोद्यां चौमासी प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० १३ बोल १४)

२८ चुलणी पिया, पोषा में माता ने बचायिवा उठ्यो तो व्रत नियम भांग्या कह्या ।

(उपाशक दशा अ० ३)

२९ नावा में पाणी आवतो देखी साधु ने गृहस्थ प्रते बतावणो नहीं ।

(आचारांग श्रु० २ अ० ३ उ० १)

३० साधु अनुकम्पा आणी त्रस जीव ने बांधे बंधावे तथा बांधते प्रते भलो जाणे तथा बंधिया जीवां ने अनुकम्पा आणी छोड़े, छुड़ावे छोड़ते ने भलो जाणे तो प्रायश्चित कह्यो।

(निशीथ उ० १२ बोल १-२)

३१ साधु कुतूहल निमित्त त्रस जीव ने बांधे बंधावे अने छोड़े छुड़ावे तो प्रायश्चित कह्यो।

(निशीथ उ० १७ बोल १-२)

३२ जे साधु पच्चखाण भांगे अने भांगता ने अनुमोदे तो दण्ड कह्यो।

(निशीथ उ० १२ बाल ३-४

३३ गृहस्थ साधु नी अनुकम्पा आणी तैलादि मर्दन करे तिहां 'कोलुण वडियाए' पाठ कह्यो।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १)

३४ हरिणगवेषी सुलसां नी अनुकम्पा कीधी।

(अन्तगढ़ वर्ग ३ अ० ८)

३५ कृष्णाजी डोकरानी अनुकम्पा करी ईंट उपाड़ी।

(अन्तगढ़ वर्ग ३ अ० ८)

३६ हरिकेशी नी अनुकम्पा आणी यक्ष विप्रां ने ऊंधा पाड़्या।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ८ से २५ ताँई)

३७ धारणी राणी गर्भनी अनुकम्पा आणी मन गमता अशनादिक खाया ।

(ज्ञाता अ० १)

३८ अभयकुमार नी अनुकम्पा आणी देवता मेह बरसायो ।

(ज्ञाता अ० १)

३९ जिन ऋषि करुणा आणी रयणा देवी रे साहमो जोयो ।

(ज्ञाता अ० ९)

४० प्रथम आस्रव द्वार ने करुणा रहित कह्यो ।

(प्रश्न व्याकरण अ० १)

४१ करुणा सहित जिन ऋषि ने रयणा देवी दया रहित परिणामे करि हण्यो ।

(ज्ञाता अ० ९)

४२ सूर्याभ देवतारी नाटक रूप भक्ति कही ।

(राय प्रसेणी)

४३ यक्षे कात्रां ने ऊंधा पाड्या ते हरिकेशीनी व्यावच कही ।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ३२)

४४ भगवान शीतल तेजू लब्धि करी गोशाले ने बचायो तिहां 'अणुकम्पणट्ठाए' पाठ कह्यो ।

(भगवती श० १५)

लब्धि अधिकारः ।

---

१ वैक्रिय तथा तेजस लब्धि फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया कही ।

(पन्नवणा पद ३६)

२ आहारिक लब्धि फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया कही ।

(पन्नवणा पद ३६)

३ आहारिक लब्धि फोड़े तिणने प्रमाद आस्री अधिकरण कह्यो ।

(भगवती श० १६ उ० १)

४ जंघाचारण अथवा विद्याचारण लब्धि फोड़ी बिना आलोयां मरै, तो विराधक कह्यो ।

(भगवती श० २० उ० ६)

५ वैक्रिय लब्धि फोड़े तिणने मायी कह्यो अने आलोयां विना मरै, तो विराधक कह्यो ।

(भगवती श० ३ उ० ४)

६ सात प्रकारे छद्मस्थ तथा सात प्रकारे केवली जाणीजै ।

(ठाणांग ठाणै ७)

७ अम्बड सन्यासी वैक्रिय लब्धि फोड़ी, सौ घरां

पारणो कीधो ते लोकां ने विस्मय उपजायवा भणी ।

(उववाई प्रश्न १४)

८ साधु अनेरा ने विस्मय उपजावै तो चौमासी प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० ११)

प्रायश्चित्ताऽधिकारः ।

१ सीहो अणगार मोटे २ शब्दे रोयो ।

(भगवती श० १५)

२ अइमुत्ते साधु पाणी में पाली तराई ।

(भगवती श० ५ उ० ४)

३ रहनेमी, राजमती ने विषय रूप वचन बोल्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० २२ गा० ३८)

४ धर्मघोषना साधां नागश्री ब्राह्मणी ने बाजार में हेली निन्दी ।

(ज्ञाता अ० १६)

५ सेलक ऋषि ने उमन्नो पासत्थो कह्यो ।

(ज्ञाता अ० ५)

६ गोशाला नो जीव विमलवाहन राजा ने सुमंगल नामे अणगार, तेजू लब्धिइं करी हणस्ये ।

(भगवती श० १५)

७ खंधक नामे अणगार संथारो कीधो तिहां 'आलोइय पडिक्कन्ते' पाठ कह्यो ।

(भगवती श० २ उ० १)

८ तिसक मुनिने छेहड़े तिहां 'आलोइय पडिक्कन्ते' पाठ कह्यो ।

(भगवती श० ३ उ० १)

९ कार्तिक सेठने छेहड़े तिहां 'आलोइय पडिक्कन्ते' पाठ कह्यो ।

(भगवती श० १८ उ० २)

१० कषाय कुशील नियण्ठा नो वर्णन ।

(भगवती श० २५ उ० ६)

११ दृष्टिवाद नो धणी पिण वचन खलावे ।

(दशवैकालिक अ० ८ गा० ५०)

१२ अनुत्तर विमाण ना देवता उदीर्ण मोह नथी, अने क्षीण मोह नथी, उपशांत मोह छै ।

(भगवती श० ५ उ० ४)

१३ हाथी अने कुंथुआ ने अपच्चखाण की क्रिया समान कही ।

(भगवनी श० ७ उ० ८)

१४ सर्वं भवी जीव मोक्ष जास्ये ।

(भगवती श० १२ उ० २)

१५ पुद्गलास्तिकाय में ८ स्पर्श कह्या ।

(भगवती श० १२ उ० ५)

गोशालाऽधिकारः ।

---

१ भगवन्त गौतम ने कह्यो—हे गौतम ! गोशाले मोने कह्यो तुम्हें मांहरा धर्माचार्य अने हूं आपरो धर्मान्तिवासी शिष्य । तिवारे में अङ्गीकार कीधुं ।

(भगवती श० १५)

२ सर्वानुभूति, सुनक्षत्र मुनि गोशाला ने कह्यो—हे गोशाला ! तोने भगवान मूंड्यो । तोने भगवान प्रवर्ज्या दीधी । तोने शिष्य कियो । तोने सिखायो अने तोने बहुश्रुति कियो । तूं भगवान सूँ इज मिथ्यात्व पडिवज्ज्यो छै ?

(भगवती श० १५)

३ भगवान पिण कह्यो—हे गोशाला ! में तोने प्रवर्ज्या दीधी ।

(भगवती श० १५)

४ गोशाला ने कुशिष्य कह्यो ।

(भगवती श० १५)

गुणवर्णनाऽधिकारः ।

१ गणधरां भगवान ना गुण किया ।

(आचारांग श्रु० १ अ० ६ उ० ४ गाथा ८)

२ भगवान, साधां नां अनेक गुण किया ।

(उववाई प्रश्न २१)

३ कोणक ने माता पिता नो विनीत कह्यो ।

(उववाई)

४ श्रावकां ने धर्म ना करणहार कह्या ।

(उववाई प्रश्न २०)

५ गोतमा ना गुण कह्या ।

(भगवती श० १ उ० १)

लेश्याऽधिकारः ।

१ छद्मस्थ तीर्थङ्कर में कषाय कुशील नियण्ठो कह्यो ।

(भगवती श० २५ उ० ६

२ कषाय कुशील नियण्ठा में छः लेश्या कही ।

(भगवती श० २५ उ० ६)

३ सामायक चारित्र छेदोस्थापनीय चारित्र में छः लेश्या पावै ।

(भगवती श० २५ उ० ७)

४ छः लेश्या ना लक्षण ।

(आवश्यक अ० ४)

५ च्यार ज्ञानवाला साधु में पिण कृष्ण लेश्या कही छै ।

(पन्नवणा पद १७ उ० ३)

६ कृष्ण, नील अने कापोत लेश्या में च्यार ज्ञान नी भजना कही ।

(भगवती श० ८ उ० २)

७ कृष्णादिक तीन लेश्या प्रमादी साधु में हुवै ।

(भगवती श० १ उ० १)

८ तेजू पद्म लेश्या सरागी में हुवै ।

(भगवती श० १ उ० २)

९ संयती में पिण कृष्ण लेश्या हुवै ।

(पन्नवणा पद १७ उ० १)

वैयावृत्ति अधिकार ।

---

१ यक्षे छात्रां ने ऊंधा पाड्या ते हरकेशी नी व्यावच कही ।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ३२)

२ सूर्याभ देव नी नाटक रूप भक्ति कही ।

(राय प्रसेणी)

३ भगवान ना अङ्गोपाङ्ग ना हाड भक्तिइं करी देवता ग्रहण करै ।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

४ वीस बोल करी तीर्थङ्कर गोत्र बंधे ।

(ज्ञाता अ० ८)

५ साता दियां साता हुवै इम कहै ते आर्य मार्ग थी अलगो । समाधि मार्ग थी न्यारो । जिन धर्म री हेलणा रो करणहार । अल्प सुखां रे अर्थे घणा सुखां रो हारणहार । ए असत्य पक्ष अण छांडवे करी मोक्ष नहीं । लोह वाणिया नी परै घणो झूरसी ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ३ उ० ४ गा० ६-७)

६ पांच स्थानके करी श्रमण निग्रन्थ ने महा निर्जरा हुवै । तिहां कुल गण संघ साधर्मी साधु ने कह्या ।

(ठाणांग ठाणे ५ उ० १)

७ दश प्रकार नी व्यावच साधुरैइज कही ।

(ठाणांग ठाणे १०)

८ पुनः दश प्रकार नी व्यावच साधुरैइज कही ।

(उववाई)

९ साधु ना समुदाय ने गण संघ कह्यो ।

(भगवती श० ८ उ० ८)

१० सावद्य व्यावच पर भिक्षुगणिराज कृत वार्तिका कहै छै।

११ साधु नी अर्श छेदै तिण वैद्य ने क्रिया कही।

(भगवती श० १६ उ० ३)

१२ साधु अन्य तीर्थी तथा गृहस्थ पासे अर्श छेदावै तथा कोई अनेरा साधुनी अर्श छेदतां अनुमोदै तो मासिक प्रायश्चित आवै।

(निशीथ उ० १५ बोल ३१)

१३ साधु रो गूमड़ो गृहस्थ छेदै तो साधु ने मने करी अनुमोदनो नहीं तथा वचन अने काया करी करावे नहीं।

(आचारांग श्रु० २ अ० १३)

विनयाऽधिकारः।

---

१ दोय प्रकार नो विनय मूल धर्म कह्यो साधु ना पञ्च महाव्रत ते साधु नो विनयमूल धर्म अने श्रावक ना १२ व्रत तथा ११ पड़िमा ते श्रावक नो विनयमूल धर्म।

(ज्ञाता अ० ५)

२ पांडुराजा अने पांच पाण्डव माता कुन्ता सहित नारद ने त्रिप्रदक्षिणा देई वन्दना नमस्कार कियो। घणो विनय कियो।

(ज्ञाता अ० १६)

३ जिम पांडु नारद नो विनय कियो तिमहिज कृष्ण पिण नारद नो विनय कियो।

(ज्ञाता अ० १६)

४ साधु गृहस्थादिक ने वांदतो थको अशनादिक जाचे नहीं।

(दशवैकालिक अ० ५ उ० २ गा० २६)

५ अम्बड़ ने चेला धर्माचार्य कही नमोत्थुणं गुण्यो।

(उववाई अ० १२)

६ धर्माचार्य साधु ने कह्या।

(राय प्रसेणी)

७ भरत चक्रवर्ती चक्र रत्न ने नमस्कार कियो।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

८ तीर्थङ्कर जन्म्या ते द्रव्य तीर्थङ्कर ने इन्द्र नमोत्थुणं गुण नमस्कार करै।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

९ इन्द्र एहवूं कह्यो जे तीर्थङ्कर नों जन्म महिमा करूं ते म्हारो जीत आचार छै पिण ये महिमा धर्म हेतु करूं इम नथी कह्यो।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

१० तीर्थङ्कर नी माता ने इन्द्र प्रदक्षिणा देई नमस्कार करै।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

११ अरिहन्तादिक पांच पदांनेंज नमस्कार करवो कह्यो।

(चन्द्र प्रज्ञप्ति गा० २)

१२ सर्वानुभूति अणगार गोशाले ने श्रमण माहण नो हिज विनय करवा कह्यो।

(भगवती श० १५)

१३ अठारह पाप सूं निवर्तें तेहने माहण कह्यो।

(सूयगडाँग श्रु० १ अ० १६)

१४ माहण नाम साधुरोहिज कह्यो।

(सूयगडाँग श्रु० २ अ० १)

१५ त्रस स्थावर त्रिविधे २ न हणै तेहने माहण कह्यो तथा और भी अनेक लक्षण माहणना बताया।

(उत्तराध्ययन अ० २५ गा० १६ से २६ ताँई)

१६ समण माहण सर्व अतिथि नो नाम कह्यो।

(अनुयोग द्वार)

१७ श्रावक ने एतला नामे करी बोलाणो कह्यो— हे श्रावक! हे उपाशक! हे धार्मिक! हे धर्म-प्रिय! एहवा नामा करी बोलावणो कह्यो।

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० ४ उ० १)

पुण्याऽधिकारः ।

१ परलोक ने अर्थे तप नहीं करवो ।

(दशवैकालिक अ० ६ गा० ४)

२ गाढ़ा पुण्य न करै तो मरणान्ते पश्चाताप करै ।

(उत्तराध्ययन अ० १३ गा० २१)

३ पुण्यमद सांभली भरत चक्रवर्ती दीक्षा लीधी ।

(उत्तराध्ययन अ० १८ गा० ३४)

४ अकृतपुण्य ना धणी धर्म सांभली प्रमाद करै ते संसार में भ्रमण करै ।

(प्रश्न व्याकरण अ० ५)

५ यश नो हेतु तप संयम कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० ३ गा० १३)

६ आत्मा ने अयश अर्थात् असंयम करी जीव नरक में उपजै ।

(भगवती श० ४१ उ० १)

७ नरक ना हेतु ने नरक कही ।

(उत्तराध्ययन अ० ६ गा० ८)

८ मृग सरिसा अज्ञानी ने मृग कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ५)

आस्रवाऽधिकारः ।

१ पञ्च आस्रव द्वार कह्या ।

(ठाणाँग ठा० ५ तथा समवायाङ्ग सं० ५)

(क) तथा मिथ्यादृष्टि ने अरूपी कही ।

(भगवती श० १२ उ० ५)

२ पञ्च आस्रव ने कृष्ण लेश्या ना लक्षण कह्या ।

(उत्तराध्ययन अ० ३४ गा० २१-२२)

३ सम्यक् अने मिथ्यात्व ने जीव क्रिया कही ।

(ठाणाँग ठा० २ उ० १)

४ दश प्रकार नो मिथ्यात्व कह्यो ।

(ठाणाँग ठाणे १०)

५ अठारह पाप में वर्ते तेहिज जीव अनें तेहिज जीवात्मा कही ।

(भगवती श० १७ उ० २)

६ जीव अजीव परिणामी रा दश २ भेद कह्या ।

(ठाणाँग ठा० १०)

७ कषाय, जोग, दर्शन ए आत्मा कही ।

(भगवती श० १२ उ० १०)

८ उदय निष्पन्न रा तेतीस बोलां ने जीव कह्या ।

(अनुयोग द्वार)

९ उत्थानादिक ने अरूपी कह्या ।

(भगवती श० १२ उ० ५)

१० क्रोधादिक ने भाव संयोगी कह्या ।

(अनुयोग द्वार)

११ क्रोधादिक ने भाव लाभ कह्यो ।

(अनुयोग द्वार)

१२ अकुशल मनने रूंधवो कह्यो ।

(उववाई)

१३ माठा भाव थी ज्ञानादिक खपे ।

(अनुयोग द्वार)

१४ आस्रव ने, मिथ्या दर्शनादिक ने जीवरा परिणाम कह्या ।

(ठाणाँग ठा० ६)

सम्बराऽधिकारः ।

---

१ पंच सम्बर द्वार प्ररूप्या ।

(ठाणाङ्ग ठा० ५ उ० २ तथा समवायाङ्ग स० ५)

२ जीव रा ज्ञानादिक छव लक्षण कह्या ।

(उत्तराध्ययन अ० २८ गा० ११-१२)

३ चारित ने जीव गुण परिणाम कह्या ।

(अनुयोग द्वार)

४ सम्बर ने आत्मा कही ।

(भगवती श० १ उ० ६)

५ अठारह पाप ना विरमण ने अरूपी कह्यो ।

(भगवती श० १२ उ० ५)

६ अठारह पाप ना विरमण ने जीव द्रव्य कह्यो ।

(भगवती श० १८ उ० ४)

—:—

जीव भेदाऽधिकारः ।

१ विशिष्ट अवधि रहित ने असंज्ञीभूत कह्यो ।

(पन्नवणा पद १५ उ० १)

२ नन्हा बालक तथा बालिका ने असंज्ञीभूत कह्या ।

(पन्नवणा पद ११)

३ आठ सूक्ष्म कह्या ।

(दशवैकालिक अ० ८ गा० १५)

४ तेउ वाउ ने त्रस कह्या ।

(जीवाभिगम प्रश्न १)

५ सम्मूर्च्छिम मनुष्य ने पर्याप्ता अपर्याप्ता बिहुं नामे करी बोलाव्यो ।

(अनुयोग द्वार)

६ असुर कुमार ने उपजती वेलां वे वेद कह्या ।

(भगवती श० १३ उ० २)

—:—

आज्ञाऽधिकारः ।

१ वीतराग ना पग थकी जीव मुवां ईर्यावहि क्रिया कही ।

(भगवती श० १८ उ० ८)

२ सम्यक् मानता ने असम्यक् पिण सम्यक् हुइ ।

(आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० ५)

(क) तीन उदक ना लेप लगावे तिणने सबलो दोष कह्यो ।

(दशाश्रुतस्कन्ध अ० २)

३ पांच मोटी नदी एक मास में बे वार अथवा तीन वार उतरवो कल्पे नहीं ।

(बृहत्कल्प उ० ४)

४ साधु ने नदी उतरवो कह्यो ।

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० ३ उ० २)

५ पाणी में डूबती थकी साध्वी ने साधु बाहिर काढे तो आज्ञा उलंघे नहीं ।

(बृहत्कल्प उ० ६)

६ रात्रि में सिज्झायदिक ने अर्थे बाहिर जावणो कल्पै ।

(बृहत्कल्प उ० १)

—:—

शीतल आहाराऽधिकारः ।

१ ठण्डो आहार भोगवणो कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० ८ गा० १२)

२ भगवन्त ठण्डो आहार लीधो कह्यो ।

(आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ६ उ० ४)

३ धन्ने अणगार न्हाखितो आहार लियो ।

(अनुत्तर उववाई)

४ अरस निरस तथा शीतलादिक आहार भोगवो । साधु ने द्वेष न करिवो ।

(प्रश्न व्याकरण अ० १०)

—:—

सूत्र पठनाऽधिकारः ।

१ साधुनेद्रज सूत्र भणवा री आज्ञा दीधी ।

(प्रश्न व्याकरण अ० ७)

२ साधु सूत्र भणे तिण री मर्यादा कही ।

व्यवहार उ० १०)

३ अन्य तीर्थी ने तथा गृहस्थी ने साधु सूत्र रूप वांचणी देवै तथा देता ने अनुमोदे तो प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० १६)

४ आचार्य उपाध्याय नी अणदीधी बांचणी ग्रहै, तो प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० १६)

५ तीन जणा बांचणी देवा अयोग्य कह्या ।

(ठाणाङ्ग ठा० ३ उ० ४)

६ श्रावकां ने अर्थ रा जाण कह्या ।

(उववाई प्रश्न २०)

७ निग्रन्थ ना प्रवचन ने सिद्धान्त कह्या ।

(सूयगडाँग श्रु० २ अ० २)

८ साधुनेइज शुद्ध धर्म ना प्ररूपणाहार कह्या ।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ११ गा० २४)

९ अभाजन ने सूत्र सिखावै त्याने अरिहन्त नी आज्ञा ना उलङ्घनहार कह्या ।

(सूर्य प्रज्ञप्ति पाहु० २०)

१० अर्थ ने पिण 'सूय धम्मे' कह्यो ।

(ठाणाङ्ग ठा० २ उ० १)

११ सूत्र आश्री तीन प्रत्यनीक कह्या ।

(भगवती श० ८ उ० ८)

१२ पंचेन्द्रिय ना उपयोग ने श्रुत कह्यो ।

(पन्नवणा पद २३ उ० २)

१३ भावश्रुत ना १० नाम पर्यायवाची कह्या ।

(अनुयोग द्वार)

— —

निरवद्य क्रियाऽधिकार ।

१ अठारह पाप सूं निवर्त्यां कल्याणकारी कर्म बंधे ।

(भगवती श० ७ उ० १०)

२ वन्दना करतां नीच गोत्र खपावे ।

(उत्तराध्ययन अ० २९ बोल १०)

३ धर्मकथा सूं शुभ कर्म बन्धै ।

(उत्तराध्ययन अ० २९ बोल २३)

४ व्यावच्च कियां तीर्थंकर गोत्र बंधे ।

(उत्तराध्ययन अ० २९ बोल ४३)

५ तीन प्रकार शुभ दीर्घायु बंधे ।

(भगवती श० ५ उ० ६)

६ दश प्रकार कल्याणकारी कर्म बंधे ।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

७ अठारह पाप सेयां कर्कश वेदनीय कर्म बंधे अने १८ पाप सूं निवर्त्यां अकर्कश वेदनीय कर्म बंधे ।

(भगवती श० ७ उ० ६)

८ वीस बोलां करी तीर्थंकर गोत्र बन्धै ।

(ज्ञाता अ० ८)

९ प्राण, भूत, जीव, सत्व ने दुःख न दियां साता वेदनी कर्म बन्धे ।

(भगवती श० ७ उ० ६)

१० आठ कर्म निपजावा नी करणी जुदी २ कही।

(भगवती श० ८ उ० ६)

११ धर्म रुचि अणगार ने तुम्बो परठवा नी आज्ञा दीधी।

(ज्ञाता अ० १६)

१२ भगवान साधां ने गोशाले सूं चर्चा करले की आज्ञा दीधी तथा सर्वानुभूति ने विनीत कह्यो।

(भगवती श० १५)

१३ गुरु नी आज्ञा आराधे तिण ने विनीत कह्यो।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० २)

—:—

निग्रन्थाहाराऽधिकार।

१ साधु प्राशुक आहार भोगवै तो ७ कर्म ढीला पाड़े।

(भगवती श० १ उ० ६)

२ ज्ञान दर्शन चारित्र वहवा ने अर्थे साधु आहार करे।

(ज्ञाता अ० २)

३ साधु मोक्ष ने अर्थे आहार करे।

(ज्ञाता अ० १८)

४ साधु जयणा सूँ आहार करै तो पाप कर्म बंधै नहीं।

(दशवैकालिक अ० ४ गा० ८)

५ साधु ना आहार नी वृत्ति असावद्य कही।

(दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० ९२)

६ निर्दोष आहार ना लेवणहार तथा देवणहार दोनों शुद्ध गति में जावै।

(दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० १००)

७ छव स्थानके करी साधु आहार करे तो आज्ञा उलंघै नहीं।

(ठाणाङ्ग ठा० ६)

निर्ग्रन्थ निद्राऽधिकार।

१ साधु रे यत्नाइं करी सोवतां पाप बन्धै नहीं।

(दशवैकालिक अ० ४ गा० ८)

२ 'सुत्ते' नाम निद्रावन्त नो छै।

(दशवैकालिक अ० ४)

३ कांइक सुतो कांइक जागतो स्वप्न देखै।

(भगवती श० १६ उ० ६)

४ अभिग्रह धारी साधु तीजी पौरसी में निद्रा मूकै।

(उत्तराध्ययन अ० २६ गा० १८)

५ पाणी ने किनारे निद्रादिक कार्य करना कल्पै नहीं ।

(बृहत्कल्प उ० १ बोल १६)

६ अन्तर घर में निद्रा लेणी कल्पै नहीं ।

(बृहत्कल्प उ० ३ बोल २१)

७ साधु ने भाव निद्राइं करी जागतो कह्यो ।

(आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ३ उ० १)

—:—

एकाकि साधु-अधिकारः ।

१ ग्रामादिक का घणा निकाल पैसार हुवै तिहां घणा आगमना जाण बहुश्रुति ने पिण एकाकि पणे न कल्पै ।

(व्यवहार उ० ६)

२ ग्रामादिक तथा सरायादिक ने विषे घणा निकाल पैसार हुवै तिहां अगडसुया ते निशीथ ना अजाण त्यांने एकाकि पणै न कल्पै ।

(व्यवहार उ० ६)

३ ग्रामादिक ना जुदा २ निकाल हुवै तिहां साधु साध्वी ने भेलो रहिवो कल्पै ।

(बृहत्कल्प उ० १ बोल ११)

४ एकलो रहै तिण में आठ दोष कह्या।

(आचारांग श्रु० १ अ० ५ उ० १)

५ सूत्र अने वय करी अव्यक्त तेह ने एकाकि पणो कल्पै नहीं। तथा सूत्र अने वय करी व्यक्त छै तिण ने पिण गुरु नी आज्ञा सूं एकाकि पणो कल्पै पिण आज्ञा विना कल्पै नहीं।

(अचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० ४)

६ आठ गुणसहित ने एकल पड़िमा योग्य कह्यो श्रद्धा में सेंठो १ देव डिगायो डिगै नहीं २ सत्य-वादी ३ मेधावी (मर्यादावान) ४ बहुस्सुये (नवमा पूर्वनी तीन वत्थु नो जाण) ५ शक्तिवान ६ कलहकारी नहीं ७ धैर्यवन्त ८ उत्साह वीर्यवन्त।

(ठाणांग ठाणै० ८)

७ साधु अने श्रावक बिहुं ने धर्मना करणहार कह्या वलि साधु अने श्रावक ने 'सुव्वया' कह्या।

(उववाई प्रश्न २०-२१)

८ घणा साधा में पिण विकाले तथा रात्रि में एकला ने दिशा न जाणो।

(वृहत्कल्प उ० १ बोल ४७)

९ जे ज्ञानादिक ने अर्थे गुरुवादिक नी सेवा करै तो गच्छ मध्यवर्ती साधु निपुण सखाइयो वांछे।

(उत्तराध्ययन अ० ३२)

१० राग द्वेष ने अभावे एकलो ऊभो रहै पिण भिख्यार्थां ने उलङ्घी न जाय।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ३३)

११ रागद्वेष ने अभावे एकलो कह्यो।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० १०)

१२ जे हूं रागद्वेष ने अभावे ज्ञानादि सहित एकलो विचरस्यूं इम विचारी दीक्षा लेवै।

(सूयगडाँग श्रु० १ अ० ४ उ० १ गा० १)

१३ घर छांडी रागद्वेष ने अभावे एकलो विचरै।

(उत्तराध्ययन अ० १५ गा० १६)

१४ तीन मनोरथ में चिन्तवे जे किंवारे हूं एकलो थई दशविधि यति धर्म धारी विचरस्यूं तेह नो न्याय।

१५ गुरु कह्यो—हे शिष्य! तोने एकलपणो म होज्यो।

(आचारांग श्रु० १ अ० ५ उ० ४)

उच्चार पासवणाऽधिकारः।

१ वड़ी नीति या लघु नीति परठी ने वस्त्रे करी पूंछे नहीं तथा पूंछता ने अनुमोदे नहीं, तो प्रायश्चित कह्यो।

(निशीथ उ० ४ बोल ३७)

२ उच्चार पासवण परठी काष्टादिके करी पूंछ्यां प्रायश्चित ।

(निशीथ उ० ४ बोल १३८)

३ उच्चार पासवण परठी ने शुचि न लेवै अथवा तठेई उच्चार ऊपर शुचि लेवै अथवा अति दूर जाई शुचि लेवै तो प्रायश्चित आवै ।

(निशीथ उ० ४ बोल १३६ से १४१)

४ दिवसे तथा रात्रि तथा विकाले पोता ना पात्रे तथा अनेरा साधु ने पात्रे उच्चार पासवण परठवी सूर्य रो ताप न पहुंचे तिहां न्हाखे तो दण्ड आवै ।

(निशीथ उ० ३ बोल ८२)

५ धन्नो सार्थवाह विजय चोर साथे एकान्ते जाई उच्चार पासवण परठ्यो कह्यो ।

(ज्ञाता अ० २)

कवित्ताऽधिकारः ।

---

१ तीर्थङ्कर ना जेतला साधु हुई ते ४ बुद्धि करी तेतला पइन्ना करै ।

(नन्दी-पञ्चज्ञान वर्णन)

२ मतिज्ञान ना दोय भेद १ श्रुत निश्चित २ अश्रुत निश्चित । तिहां जे सूत्र विना ही ४ बुद्धिइं करी सूत्र सूं मिलतो अर्थ ग्रहण करै, सूत्र विना ही बुद्धि फैलावै ते अश्रुत निश्चित मतिज्ञान नो भेद कह्यो छै । वली कह्यो पूर्व्वं दीठो नहीं सुण्यो नहीं ते अर्थ तत्काल ग्रहण करै ते उत्पात नी बुद्धि अश्रुत निश्चित मतिज्ञान नो भेद कह्यो ।

(साख सूत्र नन्दी)

३ जे भारत रामायणादिक मिथ्या दृष्टि ना कीधा ते मिथ्या दृष्टि रे मिथ्यात्व पणे ग्रह्या अने सम्यग्दृष्टि रे सम्यक्त पणे ग्रह्या ।

(साख सूत्र नन्दी)

४ च्यार प्रकार ना काव्य कह्या १ गद्यबन्ध २ पद्य-बन्ध ३ कथाकरी ४ गायवेकरी ।

(ठाणांग ठा० ४ उ० ४)

५ गाथाइं करी वाणी करी, वाणी कथी एहवुं कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० १३ गा० १२)

६ बाजा रै लारै ताल मेली गायां दण्ड कह्यो ।

(निशोथ उ० १७ बोल १४०)

अल्पपाप बहू निर्जराऽधिकारः ।

१ जे श्रावक साधु ने सचित अने असूझतो देवै, तो अल्प पाप वहु निर्जरा हुवे तेह नो न्याय ।

(भगवती श० ८ उ० ६)

२ साधु ने अप्राशुक अणेषणीक आहार दीधां अल्पायुष वान्धै ।

(भगवती श० ५ उ० ६)

३ साधु रे अशुद्ध आहार अभक्ष कह्यो ।

(भगवती श० १८ उ० १०)

४ श्रावक ने प्राशुक एषणीक ना देवणहार कह्या ।

(उववाई प्रश्न २०)

५ आनन्द श्रावक कह्यो कल्पै मुझ ने श्रमण निग्रन्थ ने प्राशुक एषणीक अशनादिक देवो ।

(उपासक दशा अ० १)

(क) आधा कर्मी अने असूझतो आहार ए निर्वद्य छै एहवो मन सें धारै तथा प्ररूपै ते विना आलोयां मरै तो विराधक कह्यो ।

(भगवती श० ५ उ० ६)

(ख) जे श्रावक प्राशुक एषणीक अशनादिक साधुने देई समाधि उपजावे, तो पाछो समाधिपावे ।

(भगवती श० ७ उ० १)

६ शुद्ध व्यवहार करी ने आधाकर्मी लियो निर्दोष जाणी ने तो पाप न लागे ।

(सूयगडांग श्रु० २ उ० ५ गा० ८-६)

(क) वीतराग जोयर चाले तेहथी कुक्कुटादिक ना अण्डादिक जीव हणीजे तेह ने पिण पाप न लागे । पुण्य नी क्रिया लागे शुद्ध उपयोग माटे ।

(भगवती श० १८ उ० ८)

(ख) साधु ईर्याइ वारी चालतां जीव हणीजे तो तेह ने पिण पाप न लागे । हणवारो कामी नहीं ते माटे ।

(आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ४ उ० ५)

७ अल्प (नहीं) वर्षा में भगवान विहार कीधो ।

(भगवती श० १५)

८ अल्प प्राणी बीज छै जिहां ते स्थानके साधु ने आहार करवो ।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ३५)

६ अल्प प्राण बीजादिक होवे तिण स्थान के शुद्ध करी आहार करवो ।

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १ उ० १)

१० साधु रे अर्थे कियो उपाश्रयो भोगवे तो महा-सावद्य क्रिया लागे । दोय पक्ष रो सेवणहार कह्यो

अने गृहस्थ पोता रे अर्थे कीधो उपाश्रयो साधु भोगावे तो एक शुद्ध पत्त रो सेवणहार कह्यो अने अल्प सावद्य क्रिया कही ।

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० २ उ० २)

—:—

कपाटाऽधिकारः ।

1 किमाड़ सहित स्थानक मन करी ने पिण वांछणो नहीं ।

(उत्तराध्ययन अ० ३५)

२ थोड़ो उघाड्यो पिण किमाड़ घणो उघाड्यो हुवे तेह ने पिण "मिच्छामि दुक्कडं" देवे ।

(आवश्यक अ० ४)

३ जागां न मिलै तो सूना घरने विषे रह्यो साधु किमाड़ जड़े उघाड़े नहीं ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १३)

४ कण्टक बोंदिया ते कांटा नी साखा करी बारणो ढक्यो हुवे तो धणी नी आज्ञा मांगी ने पूंजकर द्वार उघाड़णो ।

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १ उ० ५)

५ एहवो स्थानक साधु ने रहिवो नहीं जे उपाश्रय माहीं लघु नीति तथा वड़ो नीति परठण री

जागा न हुवै अने गृहस्थ बारला किमाड़ जड़ता हुवै तिवारे रात्रि ने विषे आवाधा पीड़ता किमाड़ खोलना पड़े ते खुला देखि माहे तस्कर आवे बतायां न बतायां अवगुण उपजता कह्या सर्व दोष में प्रथम दोष किमाड़ खोलने को कह्यो तिण कारण साधु ने किमाड़ खोलनो पड़े एहवे स्थानकि रहिवो नहीं ।

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० २ उ० २)

६ साध्वी ने उघाड़े बारने रहिवो नहीं किमाड़ न हुवे तो पोता नी पछेवड़ी बांधी ने रहिवो, पिण उघाड़े बारने रहिवो नहीं कल्पे शीलादि निमते किमाड़ जड़वो अने साधु ने उघाड़े बारने रहिवो कल्पे ।

(वृहत्कल्प उ० १)

(इति सम्पूर्णम्)

॥ जिन आज्ञा की ढाल ॥

॥ दोहा ॥

श्री जिन धर्म जिन आज्ञा मझे, आज्ञा बारे नहीं जिन धर्म। तिणस्युं पाप कर्म लागे नहीं, वले कटै आगला कर्म ॥ १ ॥ केई मूढ मिथ्याती इम कहै, जिण आज्ञा बारै जिण धर्म। जिण आज्ञा मांहि कहै पाप छै, ते भुला अज्ञानी भर्म ॥ २ ॥ जिण आज्ञा बारै धर्म कहै, जिण आज्ञा मांहि कहै पाप। ते किण हीं सूत्र में छै नहीं, युहिं करै मूढ विलाप ॥ ३ ॥ कहै धर्म तिहां देवां आगन्या, पाप छै तिहां करां निषेध। मिश्र ठिकाणे मौन छै, एहं धर्म नो भेद ॥ ४ ॥ इसड़ी करै छै परूपणा, ते करै मिश्र री थाप। ते बूडा खोटो मत बांधने, श्रीजिन वचन उथाप ॥ ५ ॥ केई मिश्र तो मानै नवि, मानै हिंसा में एकान्त धर्म। ते पण बूडै छै बापड़ा, भारी करै छै कर्म ॥ ६ ॥ जिन धर्म तो जिण आज्ञा मझे, आज्ञा बारै धर्म नहीं लिगार। तिणमें साख सूत्र री दे कहूं, ते सुणज्यो विस्तार ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥

(जीव मारे ते धर्म आछो नवि परदेशी)

आज्ञा में धर्म छै जिनराज रो, आज्ञा बारे कहै ते मूढ रे। विवेक विकल सुध बुध बिना, ते बूडे छै कर कर रूढ़ रे, श्रीजिन धर्म जिन आगन्या तिहां ॥१॥ ज्ञान दरशण चारित ने तप, एतो मोखरा मारग च्यार रे। यां च्यारां में जिनजी री आगन्यां, यां बिना नहीं धर्म लिगार रे ॥ श्री ॥ २ ॥ यां च्यारां मांहला एक एक री, आज्ञा मांगे जिनेश्वर पास रे। तिण ने देवे जिनेश्वर आगन्या, जब ओ पामै मन में हुलास रे ॥ श्री ॥ ३ ॥ यां च्यारां बिना मांगे कोई आगन्या, तो जिनेश्वर साझै मून रे। तो जिन आगन्या बिना करणी करै, ते करणी छै जावक जबून रे ॥ श्री ॥ ४ ॥ बीसां भेदां रूकै कर्म आवतां, बारे भेदे कटै मन्भिया कर्म रे। त्याने देवै जिनेश्वर आगन्या। ओहिज जिण भाख्यो धर्म रे ॥ श्री ॥ ५ ॥ कर्म रूकै तिण करणी में आगन्या, कर्म कटै तिण करणी में जाण रे। यां दोयां करणी बिना नवि आगन्या, ते सगलो सावद्य पिछाण रे ॥ श्री ॥ ६ ॥ देव अरिहन्त ने गुरु साध छै, केवली भाख्यो ते धर्म रे। और धर्म नहीं जिन आगन्या, तिण

सुं लागै छै पाप कर्म रे ॥ श्री ॥ ७ ॥ जिन भाष्या में जिनजी री आगन्या, औरां री भाष्या में और जाण रे। तिणस्यूं जीव सुधगत जावै नहीं, वले पाप लागै छै आण रे ॥ श्री ॥८॥ केवली भाषणे धर्म मंगलीक छै, ओहिज उत्तम जाण रे। शरणो पण ल्यो तूण धर्म रो, तिणमें श्रीजिन आज्ञा प्रमाण रे ॥ श्री ॥ ९ ॥ ठाम २ सूत्र मांहि देखल्यो, केवली भाषणे ते धर्म रे। मौन साझै तिहां धर्म को नहीं, मौन साझै तिहां पाप कर्म रे ॥ श्री ॥ १० ॥ मौन साक्षणियो धर्म माठो घणो, भेषधार्‍यां परूप्यो जाण रे। खांच २ बुडै छै वापड़ा, ते सूत्र रा मूढ अजाण रे ॥ श्री ॥ ११ ॥ धर्म ने शुक्ल दोनूं ध्यान में, जिन आज्ञा दीधी वारूं वार रे। आर्त रुद्र ध्यान माठा विहुं, यांने ध्यावे ते आज्ञा बार रे ॥ श्री ॥ १२ ॥ तेजु पद्म शुक्ल लेश्या भली, त्यांने जिन आगन्या ने निर्जरा धर्म रे। तीन माठी लेश्या में आज्ञा नहीं, तिणस्यूं वन्धै छै पाप कर्म रे ॥ श्री ॥ १३ ॥ च्यार मंगल च्यार उत्तम कह्या, च्यार शर्णा कह्या जिनराय रे। ए सगला छै जिन आगन्या मझे, आज्ञा विन आछी वस्तु न काय रे ॥ श्री ॥ १४ ॥ भला प्रणाम में जिन आगन्या, माठा परिणामा आज्ञा बार रे। भला परिणामा निर्जरा निपजे, माठा परिणामा पाप

द्वार रे ॥ श्री ॥१५॥ भलां अध्यवसाय में जिन आगन्या, आज्ञा बारे माठा अध्यवसाय रे। भला अध्यवसायां सूं निर्जरा हुवे, माठा अध्यवसायां सूं पाप बन्धाय रे ॥ श्री ॥१६॥ ध्यान लेश्या प्रणाम अध्यवसाय छै, च्यारूं भला में आज्ञा जाण रे। च्यारूं माठा में जिन आज्ञा नहीं, थांरा गुण री करजो पिछाण रे ॥ श्री ॥ १७ ॥ सर्व मूल गुण ने उत्तर गुण, देश मूल उत्तर गुण दोय रे। दोयां गुणा में जिनजी री आगन्या, आगन्या बारे गुण नवि कोय रे ॥ श्री ॥ १८ ॥ अर्थ परम अर्थ जिन धर्म छै, उववाई सूयगडायंग मांय रे। तिणमें तो जिनजी री आगन्या, शेष अनर्थ में आज्ञा नवि ताय रे ॥ श्री ॥ १९ ॥ सर्व व्रत धर्म साधां तणो, देशव्रत श्रावक रो धर्म रे। यां दोयां धर्म जिनजी री आगन्या, आज्ञा बारे तो बन्धसी कर्म रे ॥ श्री ॥ २० ॥ उजलो धर्म छै जिनराज रो, ते तो श्रीजिन आज्ञा सहित रे। मुगत जावा अजोग असुध कह्यो, ते तो जिन आज्ञा स्यूं विपरीत रे ॥ श्री ॥ २१ ॥ आज्ञा लोप छांदे चाले आप रै, ते ज्ञानादिक धन सूं खाली थाय रे। आचाराङ्ग अध्ययन दूसरे, जोवो छट्ठा उद्देशा मांय रे ॥ श्री ॥२२॥ आज्ञा सूं रुके ते धर्म मांहरो, एहवो चिन्तवे साधु मन मांय रे। आज्ञा विन करवो जिहांहिं रह्यो, कूड़ो

बोलवो पिण नवि थाय रे ॥ श्री ॥ २३ ॥ आज्ञा मांहलो ते धर्म मांहरो, और सर्व पारको थाय रे। आचारांग छट्ठा अध्ययन में, पहले उद्देश जोय पिछाण रे ॥ श्री ॥ २४ ॥ आगन्या मांहि संजम नै तप, आगन्या में दोनूं परिणाम रे। आज्ञा रहित धर्म आछो नवि, जिण कह्यो पराल समान रे ॥ श्री ॥ २६ ॥ निर्वद्य धर्म चतुर विध संघ छै, ते आज्ञा सहित वंछै अनुसन्तान रे। आचा- रांग चौथा अध्ययन में, तीजे उद्देशे कह्यो भगवान रे ॥ श्री ॥ २७ ॥ तिर्थंकर धर्म कीधो तिको, मोक्ष रो मारग सुध वेश रे। और मोक्ष रो मारग को नहीं, पांचमें आचारंग तीजै उद्देश रे ॥ श्री ॥ २८ ॥ जिण आज्ञा बारली करणी तणी, उद्यम करै अज्ञानी कोय रे। आज्ञा मांहली करणी रो आलस करै, गुरु कहै शिष्य तोनै दोय म होय रे ॥ श्री ॥२६॥ कुमारग तणी करणी करै, सुमारग रो आलस होय रे। ए दोनूं हीं करणी दुरगत तणी, आचारंग पांचमें अध्ययन जोय रे ॥ श्री ॥ ३० ॥ जिण मारग रा अजाण नै, जिण उपदेश नो लाभ न होय रे। आचारंग रा चौथा अध्ययन में; तीजा उद्देशा में जोय रे ॥ ३१ ॥ ज्यां दान सुपात्र नै दियो, तिणमें श्रीजिन आज्ञा जाण रे। कुपात्र दान में आगन्या नहीं; तिण री बुद्धिवन्त करज्यो पिछाण रे

२ ॥ साध बिना अनेरा सर्व ने, दान नहीं दे माठो
ा रे। दीधां भमण करै संसार में, तिणस्यूं साध
या पच्चखाण रे ॥ ३३ ॥ सूयगडांग नवमा अध्ययन
बीसमी गाथा जोय रे। वले दीधां भागे ब्रत साध
जिन आगन्या पिण नवि कोय रे ॥ ३४ ॥ पात
पात दोनूं ने दियां, बिकल कहै दोया में धर्म रे।
र्म हुसी सुपात दान में; कुपात ने दियां पाप कर्म रे
३५ ॥ खेत कुखेत श्रीजिनवर कह्यो, चौथे ठाणे
ाणा अंग माय रे। सुखेत में दियां जिन आगन्या,
कुखेत में आज्ञा नवि काय रे ॥ ३६ ॥ आहार पाणी
ने वले उपधादिक, साधु देवै गृहस्थ ने कोय रे। तिण
ने चौमासी दण्ड निशीथ में, पनरमें उदेशे जोय रे
॥ ३७ ॥ गृहस्थ ने दान दे तिण साधु ने, प्रायस्चित
आवे कीधो अधर्म रे। तो तेहिज दान गृहस्थ देवै,
त्यांने किण विध होसी धर्म रे ॥ ३८ ॥ असंजम छोड
संजम आदर्यो, कुशील छोड़ हुवो ब्रह्मचार रे। अकल्प-
णीक अकार्य परहरे, कल्प आचार कियो अंगीकार रे
॥ ३९ ॥ अज्ञान छोडने ज्ञान आदर्यो, माठी क्रिया
छोडी माठी जाण रे। भली क्रिया ने साधु आदरी,
जिण आज्ञा स्यूं चतुर सुजाण रे ॥ ४० ॥ मिथ्यात
छोड सम्यक्त आदर्यो, अबोध छोड आदर्यो बोध रे।

उनमार्ग छोड़ सनमार्ग लियो, तिणस्यूं होसी आतमा सुध रे ॥ ४१ ॥ आठ छोड़े ते जिन उपदेश सूँ, पाप कर्म तणो वन्ध जाण रे। जिण आज्ञा स्यूं आठ आदर्यां, तिणसु पामै पद निर्वाण रे ॥ ४२ ॥ ठाम २ सूत्र में देखल्यो, जिण धर्म जिण आज्ञा में जाण रे। ते मूढ मिथ्याती जाणे नहीं, युहीं बुडे छै कर कर ताण रे ॥ ४३ ॥ हूं कहि कहिने कित रो कहूँ, आगन्या वारै नहीं धर्म मूल रे। आगन्या वारै धर्म कहै तेहना, सरधा कण विना जाणो धूल रे ॥ ४४ ॥

॥ सम्पूर्णम् ॥